

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 1

हिन्दी भाषा और उसका विकास

आर्यभाषा से हिंदी तक

संपूर्ण नोट्स

आर्यभाषा काल-विभाजन

उपभाषाएँ व बोलियाँ

राजभाषा व संविधान

देवनागरी लिपि

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahity.com

पाठ्यक्रम और अध्ययन-योजना

UGC NET/JRF हिंदी (पेपर-2) की इकाई-1 का नाम “हिन्दी भाषा और उसका विकास” है। इस इकाई से हर बार लगभग 4 से 6 प्रश्न आने की संभावना रहती है, इसलिए यह कम मेहनत में अधिक अंक दिलाने वाली इकाई मानी जाती है। इसके पाँच खंड हैं।

खंड	विषय	इस पुस्तिका में
1	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन आर्यभाषाएँ, मध्यकालीन आर्यभाषाएँ (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट), पुरानी हिंदी से आधुनिक हिंदी तक का परिवर्तन, आधुनिक आर्यभाषाओं का वर्गीकरण	भाग 1
2	भौगोलिक विस्तार : हिंदी की उपभाषाएँ और उनकी बोलियाँ	भाग 2
3	भाषिक स्वरूप : ध्वनि-व्यवस्था, शब्द-रचना, रूप-रचना, वाक्य-रचना	भाग 3
4	प्रयोग के विविध रूप : बोली और मानक भाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संचार माध्यम और कंप्यूटर में हिंदी, संवैधानिक स्थिति	भाग 4
5	देवनागरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण	भाग 5

इस पुस्तिका को कैसे पढ़ें

- पहले हर भाग के **चित्र और तालिकाएँ** देखें, फिर विस्तार पढ़ें।
- हरे रंग के “**परीक्षा-बिंदु**” वाले बॉक्स सबसे ज़्यादा पूछे जाने वाले तथ्य हैं। इन्हें अलग से दोहराएँ।
- नीले रंग के लिंक पर क्लिक करके स्टोर के संबंधित नोट्स भी देख सकते हैं।
- अंत में अभ्यास-प्रश्न और उत्तर-कुंजी हल करके अपनी तैयारी जाँचें।

इकाई-1 एक नज़र में

यह डेमो फ़ाइल है — पूरे नोट्स स्टोर पर उपलब्ध हैं

आपकी परीक्षा के लिए स्पेशल नोट्स — ऑर्डर पर तैयार!

RPSC, TGT, PGT, UPSC, UGC NET/JRF या किसी भी भर्ती परीक्षा के लिए आपके सिलेबस के अनुसार **अलग से नोट्स** हमारी टीम आपके **ऑर्डर पर तैयार करके देती है।**

- ✓ आपके पाठ्यक्रम पर आधारित
- ✓ आसान भाषा, तालिकाएँ, अभ्यास प्रश्न
- ✓ PDF रूप में व्हाट्सएप पर

यह सेवा **सशुल्क** है; शुल्क ऑर्डर के समय बता दिया जाता है।

ऑर्डर के लिए WhatsApp करें: 9680260474



लेखक परिचय

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी), कॉलेज
व्याख्याता, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

UGC NET पेपर-1 — पूरा कोर्स कॉम्बो

पेपर-1 की सभी इकाइयों के संपूर्ण हिंदी नोट्स, एक ही कॉम्बो में — सीधे खरीदें और आज से तैयारी शुरू करें।

अभी खरीदें → UGC NET पेपर-1 नोट्स

हमारे लिंक

- 🌐 store.hindisahity.com — पूरे नोट्स और टेस्ट सीरीज़
- 🌐 hindisahity.com — निःशुल्क अध्ययन-सामग्री
- ▶ [YouTube : हिंदी साहित्य चैनल](https://www.youtube.com/channel/UC...)
- ➔ [Telegram : t.me/hindisahitychannel](https://t.me/hindisahitychannel)

यह डेमो अपने साथियों और ग्रुप में शेयर करें

क्रम	विषय	याद रखने वाला मुख्य सूत्र
1	आर्यभाषा का काल-विभाजन	प्राचीन 1500 ई.पू.-500 ई.पू. मध्यकालीन 500 ई.पू.-1000 ई. आधुनिक 1000 ई. से
2	मध्यकालीन के तीन चरण	पालि → प्राकृत → अपभ्रंश (अवहट्ट संक्रमण-काल)
3	हिंदी की उपभाषाएँ	5 उपभाषाएँ, 17 बोलियाँ (धीरेन्द्र वर्मा)
4	खड़ी बोली	मानक हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी की मूल बोली
5	राजभाषा	अनुच्छेद 343 : संघ की राजभाषा हिंदी (देवनागरी लिपि)
6	अनुच्छेद 351	हिंदी के प्रसार और विकास का संघ का कर्तव्य
7	आठवीं अनुसूची	मूलतः 14 भाषाएँ, अब 22
8	देवनागरी	ब्राह्मी से विकसित; केंद्रीय हिंदी निदेशालय (1960) वर्तनी-मानकीकरण करता है

भाग 1 : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.1 भाषा, विभाषा और बोली

भाषा-विज्ञान में “भाषा”, “विभाषा” और “बोली” का अंतर प्रश्नों में अक्सर पूछा जाता है। इनकी परिभाषाएँ इस प्रकार हैं।

शब्द	अर्थ	उदाहरण
बोली	छोटे क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा, जिसमें साहित्य-रचना प्रायः नहीं होती।	बघेली, मेवाती, मालवी
विभाषा	वह बोली जिसमें साहित्य-रचना होने लगती है और जिसका क्षेत्र बढ़ता है।	ब्रजभाषा, अवधी (काव्य-भाषा के रूप में)
भाषा	वह विभाषा जो साहित्य के माध्यम से परिनिष्ठित (मानक) और सर्वमान्य रूप पा जाती है।	खड़ी बोली पर आधारित मानक हिंदी

खड़ी बोली मेरठ, बिजनौर आदि क्षेत्र की बोली होते हुए भी राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति मिलने के कारण **मानक हिंदी** के पद पर पहुँची।

1.2 भारत के भाषा-परिवार

आकृति के आधार पर हिंदी **वियोगात्मक (विश्लिष्ट)** भाषा मानी जाती है और यह **भारोपीय परिवार** की **भारतीय-आर्य उपशाखा** से विकसित हुई है। भारत में चार भाषा-परिवार मिलते हैं।

भारत के चार भाषा-परिवार (बोलने वालों का लगभग प्रतिशत)

भारोपीय		73%
द्रविड़		25%
आस्ट्रिक		1.3%
चीनी-तिब्बती		0.7%

चित्र 1 : भारत के चार भाषा-परिवार

परिवार	बोलने वाले (लगभग)	टिप्पणी
भारोपीय	73%	हिंदी, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि
द्रविड़	25%	तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि
आस्ट्रिक	1.3%	संथाली, मुंडारी आदि
चीनी-तिब्बती	0.7%	पूर्वोत्तर भारत की अनेक भाषाएँ

🎯 **परीक्षा-बिंदु:** हिंदी भारोपीय परिवार की भारतीय-आर्य उपशाखा की भाषा है। भारत में सर्वाधिक लोग (लगभग 73%) भारोपीय परिवार की भाषाएँ बोलते हैं। भारोपीय परिवार में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, बंगाली, फ़ारसी, ग्रीक, लैटिन, अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन आदि आती हैं।

1.3 भारतीय आर्यभाषा का काल-विभाजन

भारतीय आर्यभाषा के विकास को तीन बड़े कालों में बाँटा जाता है। यही इकाई-1 का सबसे महत्वपूर्ण आधार है।

भारतीय आर्यभाषा का काल-विभाजन

प्राचीन आर्यभाषा	मध्यकालीन आर्यभाषा	आधुनिक आर्यभाषा
1500 ई.पू. – 500 ई.पू.	500 ई.पू. – 1000 ई.	1000 ई. से अब तक
वैदिक (छान्दस्)	पालि 500 ई.पू.-1 ई.	हिंदी, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, उड़िया, असमिया आदि
1500-1000 ई.पू.	प्राकृत 1-500 ई.	
लौकिक संस्कृत	अपभ्रंश 500-1000 ई.	
1000-500 ई.पू.		

चित्र 2 : भारतीय आर्यभाषा का काल-विभाजन

काल	समय	भाषाएँ / विशेषता
प्राचीन	1500 ई.पू. – 500 ई.पू.	वैदिक संस्कृत (छान्दस्, 1500-1000 ई.पू.) और लौकिक संस्कृत (1000-500 ई.पू.)
मध्यकालीन	500 ई.पू. – 1000 ई.	पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट
आधुनिक	1000 ई. – अब तक	हिंदी तथा बांग्ला, उड़िया, मराठी, सिंधी, असमिया, गुजराती, पंजाबी आदि

प्राचीन आर्यभाषाएँ

- **वैदिक संस्कृत (छान्दस्)** वेदों की भाषा है। इसका समय लगभग 1500 से 1000 ई.पू. माना जाता है।
- **लौकिक संस्कृत** (1000-500 ई.पू.) साहित्य और व्याकरण की परिनिष्ठित भाषा बनी। संस्कृत के व्याकरण-चिंतन में पाणिनि का योगदान सबसे बड़ा माना जाता है।
- भाषा-विज्ञान के विकास में पाणिनि, भर्तृहरि, सस्यूर, ब्लूमफील्ड और चॉम्स्की के योगदान को सबसे अधिक माना गया है।

मध्यकालीन आर्यभाषाएँ : तीन चरण

चरण	नाम	समय	विशेष
प्रथम प्राकृत काल	पालि	500 ई.पू. – 1 ई.	बुद्ध के उपदेश पालि में हैं।
द्वितीय प्राकृत काल	प्राकृत	1 – 500 ई.	महावीर के उपदेश प्राकृत में हैं।
तृतीय प्राकृत काल	अपभ्रंश (और अवहट्ट)	500 – 1000 ई.	संक्रमणकालीन अवस्था; आधुनिक भाषाओं का आधार।

प्राकृत के प्रकार और उनसे विकसित भाषाएँ

परंपरागत भाषा-वैज्ञानिक मत (ग्रियर्सन, सुनीतिकुमार चटर्जी, धीरेन्द्र वर्मा आदि की पाठ्यपुस्तकीय परंपरा) में प्राकृत और अपभ्रंश के क्षेत्रीय भेदों से आधुनिक भाषाओं का विकास इस प्रकार बताया जाता है।

प्राकृत / अपभ्रंश	क्षेत्र	विकसित आधुनिक भाषाएँ
शौरसेनी	मथुरा-शूरसेन क्षेत्र (मध्यदेश)	पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी, गुजराती, पहाड़ी
अर्द्धमागधी	अवध-बघेलखंड क्षेत्र	पूर्वी हिंदी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)
मागधी	मगध (पूर्वी क्षेत्र)	बिहारी (भोजपुरी, मगही), बांग्ला, उड़िया, असमिया
महाराष्ट्री	महाराष्ट्र क्षेत्र	मराठी
ब्राह्मि	सिंध क्षेत्र	सिंधी
पैशाची	उत्तर-पश्चिम क्षेत्र	लहंदा, कश्मीरी (इस पर विद्वानों में मतभेद है)

★ **सावधानी:** किस प्राकृत से कौन-सी भाषा निकली, इस पर विद्वानों के मत अलग-अलग हैं। परीक्षा में "किसके अनुसार" यदि पूछा जाए तो उसी विद्वान का मत चुनें। बिना संदर्भ के प्रश्न में प्रायः पाठ्यपुस्तकीय मत (ऊपर की तालिका) ही अपेक्षित होता है।

अपभ्रंश (लगभग 500–1000 ई.)

- "अपभ्रंश" का शाब्दिक अर्थ "पतन" है, पर साहित्यिक अर्थ में यह प्राकृत से विकसित भाषा-विशेष है।
- अपभ्रंश साहित्य की शुरुआत 8वीं सदी में स्वयंभू से मानी जाती है और यह 13वीं सदी तक चला।
- हिंदी के इतिहास का आरंभ विशुद्ध रूप से अपभ्रंश से माना जाता है।

रचनाकार	प्रमुख रचना	विशेष
स्वयंभू	पउम चरिउ	राम-काव्य
धनपाल	भविस्सयत कहा	अपभ्रंश का पहला प्रबंध काव्य
पुष्पदंत	महापुराण, जसहर चरिउ	जैन अपभ्रंश कवि
सरहपा, कण्हपा	दोहाकोशी, चरिया पद	सिद्धों की रचनाएँ

अवहट्ट (लगभग 900–1100 ई.)

- "अवहट्ट" नाम "अपभ्रंश" का विकृत रूप है। इसे परवर्ती अपभ्रंश भी कहते हैं।
- यह अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के बीच की संक्रमणकालीन भाषा है।
- साहित्य में इसका प्रयोग 14वीं सदी तक मिलता है।
- विद्यापति ने अपनी भाषा को प्राकृत से अधिक मधुर बताया है।

रचनाकार	प्रमुख रचना
अब्दुर रहमान (अद्दहमाण)	संदेश रासक
दामोदर पंडित	उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण
ज्योतिरीश्वर ठाकुर	वर्ण रत्नाकर
विद्यापति	कीर्तिलता

आदिकाल से आधुनिक काल तक की साहित्यिक पृष्ठभूमि के लिए [आधुनिक काल के नोट्स](#) और [हिंदी आलोचना और आलोचक](#) भी देखें।

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 2

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आदिकाल से आधुनिक काल तक

संपूर्ण नोट्स

आदिकाल • भक्तिकाल

रीतिकाल

आधुनिक काल

गद्य साहित्य

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahity.com

हिंदी साहित्य (आदिकाल)

संपूर्ण अध्ययन नोट्स — UGC NET / JRF, UPSC, TGT, PGT, RPSC, SET (हिंदी) व अन्य
एग्जाम हेतु

भाग 1 : आदिकाल · लेखक : केवल कृष्ण घोड़ेला (WH – 9680260474) · हिंदी साहित्य चैनल

इन नोट्स का उपयोग कैसे करें

- **परीक्षा-बिंदु** : जहाँ यह शब्द आए, वह तथ्य परीक्षा में बार-बार पूछा जाता है।
- **मतभेद** : जहाँ विद्वान एकमत नहीं हैं, वहाँ अलग-अलग मत दिए गए हैं। परीक्षा में प्रश्न प्रायः "किसके अनुसार" के रूप में आता है, इसलिए नाम के साथ मत याद करें।
- **पढ़ने का क्रम** : पहले इतिहास-लेखन की पद्धतियाँ और इतिहास-ग्रंथ, फिर काल-विभाजन, फिर सिद्ध → नाथ → रासो → जैन → लौकिक साहित्य → अमीर खुसरो → विद्यापति। अंत में अतिरिक्त परीक्षाउपयोगी सामग्री (तालिकाएँ, मतभेद, कालक्रम) दी गई है।

अध्याय 1 : हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की पद्धतियाँ

साहित्य का इतिहास लिखने के कई तरीके हैं। परीक्षा में पूछा जाता है कि कौन-सी पद्धति किसने अपनाई।

1. वर्णानुक्रम पद्धति

- कवियों और लेखकों का परिचय उनके नाम के पहले अक्षर (अ, आ, क, ख...) के क्रम में दिया जाता है।
- समय का ध्यान नहीं रखा जाता। उदाहरण : कबीर (भक्तिकाल) और केशव (रीतिकाल) दोनों का नाम 'क' से शुरू होता है, इसलिए दोनों साथ-साथ आ जाते हैं, जबकि उनके काल अलग हैं।
- **प्रयोग** : गार्सा द तासी और शिवसिंह सेंगर।
- **दोष** : साहित्य का विकास-क्रम नहीं दिखता, इसलिए इतिहास की दृष्टि से इसे कमज़ोर माना जाता है।

2. कालानुक्रमी पद्धति

- कवियों को उनके जन्म-वर्ष या रचना-काल के क्रम में रखा जाता है।
- **प्रयोग** : जॉर्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु।
- **लाभ** : समय के साथ साहित्य में आया बदलाव दिखता है। **कमी** : केवल तिथि-क्रम से प्रवृत्तियाँ स्पष्ट नहीं होतीं।

3. वैज्ञानिक पद्धति

- इतिहासकार पूरी तरह तटस्थ रहकर तथ्य इकट्ठे करता है और उन्हें क्रम से रखता है।
- इसमें **क्रमबद्धता** और **तथ्यों की पुष्टि (प्रमाण)** अनिवार्य हैं।
- **दोष** : साहित्य का इतिहास केवल तथ्यों की सूची नहीं होता। उसमें व्याख्या और विश्लेषण भी चाहिए, जो इस पद्धति में कम रहता है।

4. विधेयवादी पद्धति (सबसे महत्वपूर्ण)

- **जनक** : फ्रांसीसी विचारक **तेन (Taine)**।
- तेन के अनुसार साहित्य को तीन बातों से समझा जाता है : **जाति, वातावरण, क्षण**।
- हिंदी में इस पद्धति को सुव्यवस्थित रूप से अपनाने वाले **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** हैं।
- शुक्ल जी की मान्यता : "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।" जब जनता की चित्तवृत्ति बदलती है, तब साहित्य की प्रवृत्ति भी बदलती है। इसी को वे काल-विभाजन का आधार बनाते हैं।
- **मतभेद** : नलिन विलोचन शर्मा के अनुसार हिंदी में विधेयवादी दृष्टि के आदि प्रवर्तक शुक्ल जी नहीं, **प्रियर्सन** हैं।

इतिहास-लेखन का आरंभ

- हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन का वास्तविक आरंभ **19वीं शताब्दी** से माना जाता है।
- इससे पहले की रचनाएँ — चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता और नाभादास का भक्तमाल — भक्तों/कवियों की जानकारी तो देती हैं, पर कालक्रम से साहित्य का विकास नहीं दिखातीं। इसलिए इन्हें इतिहास-ग्रंथ नहीं माना जाता।
- पहला प्रयास एक फ्रांसीसी विद्वान **गार्सा द तासी** ने किया।

अध्याय 2 : हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास-ग्रंथ

2.1 गार्सा द तासी (फ्रांसीसी विद्वान)

- **ग्रंथ** : इस्त्वार द ला लितेरेत्यूर ऐन्दुई ए ऐन्दुस्तानी (हिंदुई और हिंदुस्तानी साहित्य का इतिहास)।
- **भाषा** : मूल रूप से फ्रेंच।
- **प्रकाशन** : प्रथम संस्करण (2 भाग) — भाग 1 : 1839 ई., भाग 2 : 1847 ई.। द्वितीय संस्करण (3 भाग) — 1870-71 ई.। प्रकाशक : ओरिएंटल ट्रांसलेशन कमेटी।
- **विशेषताएँ**
- **महत्त्व** : किसी विदेशी विद्वान द्वारा हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने का पहला प्रयास। इससे भारतीय विद्वानों को प्रेरणा मिली।
- **कमियाँ** : (1) काल-विभाजन नहीं; (2) कवि कालक्रम की जगह अकारादि क्रम से रखे गए; (3) युग की प्रवृत्तियों का विवेचन नहीं।
- **परीक्षा-बिंदु** : इन कमियों के कारण शुक्ल जी इसे इतिहास नहीं, केवल 'वृत्त संग्रह' कहते हैं।

2.2 ठाकुर शिवसिंह सेंगर

- **ग्रंथ** : शिवसिंह सरोज (हिंदी भाषा में लिखा पहला साहित्येतिहास; किसी भारतीय विद्वान का पहला प्रयास)।
- **प्रकाशन** : पहले 1878 ई. में छपा; कमियाँ रह जाने पर संशोधन के बाद 1883 ई. में दोबारा छपा। प्रकाशक : नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ।
- **विशेषताएँ**
- **महत्त्व** : उस समय उपलब्ध हिंदी काव्य-संबंधी जानकारी एक जगह जुटाई गई, जिससे आगे के इतिहासकारों (विशेषतः ग्रियर्सन) को आसानी हुई।
- **कमियाँ** : काल-विभाजन नहीं; कवि कालक्रम से नहीं; घटनाओं का संकलन मनमाने ढंग से।
- शुक्ल जी इसे भी 'वृत्त संग्रह' मात्र कहते हैं।
- **परीक्षा-बिंदु** : सेंगर ने हिंदी की प्रारंभिक सीमा वि.सं. 770 तक ली और कवि **पुष्प (पुण्ड)** को हिंदी का पहला कवि माना।

2.3 जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (अंग्रेज़ विद्वान)

- **ग्रंथ** : द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ नॉर्डर्न हिंदुस्तान।
- **प्रकाशन** : 1888 ई. में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में; स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 1889 ई. में।
- **भाषा** : मूलतः अंग्रेज़ी।

- डॉ. किशोरीलाल गुप्त ने इसका हिंदी अनुवाद हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास नाम से 1957 ई. में किया (हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी)। डॉ. गुप्त के अनुसार सही अर्थों में हिंदी साहित्य का **पहला इतिहास** यही है।
- **विशेषताएँ**
- **ग्रियर्सन का काल-विभाजन**
- **इस विभाजन की कमियाँ** : यह पूरी तरह वैज्ञानिक नहीं है; चारण काल के तुरंत बाद 15वीं शताब्दी आ जाती है और 14वीं शताब्दी का उल्लेख ही नहीं; नामकरण का आधार हर जगह एक-सा नहीं है।
- **आधार-ग्रंथ** : इस्त्वार द ला लितेरेत्यूर... (तासी), शिवसिंह सरोज, भक्तमाल (नाभादास), गोसाईं चरित (बाबा बेनीमाधवदास), कालिदास हजारा (कालिदास त्रिवेदी), काव्य-संग्रह (पं. महेशदत्त), शृंगार संग्रह (सरदार कवि), सुंदरी तिलक (हरिश्चंद्र), विचित्रोपदेश (कक्कछेदी तिवारी), राग कल्पद्रुम (कृष्णानंद व्यास)।
- **परीक्षा-बिंदु**

2.4 मिश्रबंधु (गणेशबिहारी, श्यामबिहारी और शुकदेवबिहारी मिश्र)

- **ग्रंथ** : मिश्रबंधु विनोद (चार भागों में, लगभग 2250 पृष्ठ)।
- **प्रकाशन** : भाग 1, 2, 3 — 1913 ई.; भाग 4 — 1934 ई.।
- **विशेषताएँ**
- **आधार-सामग्री** : कवियों के स्वरचित ग्रंथ, शिवसिंह सरोज तथा अन्य प्राचीन संग्रह, ग्रियर्सन का ग्रंथ, मुंशी देवीप्रसाद (जोधपुर) के लेख।
- **नागरी प्रचारिणी सभा की खोज** : 1900 ई. में सभा ने हिंदी की हस्तलिखित पुस्तकों की खोज शुरू की। 1900-1908 ई. तक इसके निरीक्षक बाबू श्यामसुंदर दास रहे; 1908-1916 ई. तक श्यामबिहारी मिश्र और शुकदेवबिहारी मिश्र। इस खोज में मिले नए कवियों की जानकारी मिश्रबंधुओं ने अपने ग्रंथ में जोड़ी।
- **अन्य रचना** : हिंदी नवरत्न (1910 ई.)। इसमें नौ कवि हैं : तुलसीदास, सूरदास, देव, बिहारी, त्रिपाठी-बंधु (भूषण व मतिराम), केशव, कबीर, चंद और हरिश्चंद्र।
- **मिश्रबंधुओं का काल-विभाजन** (विक्रम संवत्)
- **इस विभाजन की कमियाँ** : कालखंडों के नाम अलग-अलग आधार पर रखे गए; परिवर्तन काल अनावश्यक है; अलंकृत काल केवल आंतरिक प्रवृत्ति पर आधारित है; विभाजन का कोई स्पष्ट एक आधार नहीं।
- **परीक्षा-बिंदु** : शुक्ल जी ने इसे 'बड़ा भारी कवि वृत्त संग्रह' और मिश्रबंधुओं को 'परिश्रमी संकलनकर्ता' कहा।

2.5 आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- **ग्रंथ** : हिंदी साहित्य का इतिहास (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)।

- **प्रकाशन** : जनवरी 1929 ई. में यह हिंदी शब्दसागर की भूमिका के रूप में छपा। उसी वर्ष शुक्ल जी ने उसमें बहुत-सी बातें बढ़ाकर इसे स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। 1940 ई. में परिवर्धित-संशोधित संस्करण आया।
- हिंदी शब्दसागर के निर्माण में तीन विद्वानों का योगदान माना जाता है : बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रामचंद्र वर्मा।
- **विशेषताएँ**
- **सामग्री के प्रमुख स्रोत** : मिश्रबंधु विनोद (मिश्रबंधु), हिंदी कोविद रत्नमाला (श्यामसुंदर दास), कविता कौमुदी (रामनरेश त्रिपाठी), ब्रजमाधुरी सार (वियोगी हरि)।
- **शुक्ल जी का काल-विभाजन** (विक्रम संवत्)
- **जीवन** : जन्म 11 अक्टूबर 1884 ई.; मृत्यु 2 फ़रवरी 1941 ई.।
- **अन्य प्रमुख रचनाएँ** : रस मीमांसा (सैद्धांतिक समीक्षा), गोस्वामी तुलसीदास और महाकवि सूरदास (व्यावहारिक समीक्षा), चिंतामणि (निबंध, चार भाग), विश्व प्रपंच (दर्शन), मधुस्रोत (काव्य-संग्रह)। संपादन : जायसी ग्रंथावली और नागरी प्रचारिणी पत्रिका।
- **प्रसिद्ध कथन** : "यदि प्रबंधकाव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता।"
- **परीक्षा-बिंदु** : आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के बाद हिंदी भाषा और साहित्य को सबसे अधिक देने वाले शुक्ल जी माने जाते हैं।

आदिकाल के लिए शुक्ल जी के बारह ग्रंथ

शुक्ल जी ने वीरगाथा काल का नाम तय करने के लिए इन **बारह ग्रंथों** को आधार बनाया :

1. विजयपाल रासो
2. हम्मीर रासो
3. पृथ्वीराज रासो
4. परमाल रासो
5. बीसलदेव रासो
6. खुमाण रासो
7. कीर्तिलता
8. कीर्तिपताका
9. विद्यापति की पदावली
10. जयचंद्र प्रकाश
11. जयमयंक जस चंद्रिका
12. अमीर खुसरो की पहेलियाँ

परीक्षा-बिंदु : इन बारह में से शुक्ल जी ने केवल **चार** को अपभ्रंश काव्य माना — कीर्तिलता, कीर्तिपताका, विजयपाल रासो, हम्मीर रासो। बाकी **आठ** को देशभाषा काव्य माना।

शुक्ल का मत — इतिहास-लेखन की पद्धति

- “एक ही काल और एक ही कोटि की रचना के भीतर जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की परंपराएँ चली हुई पाई गई हैं, वहाँ अलग-अलग शाखाएँ करके सामग्री का विभाग किया गया है।”
- “कवियों के परिचयात्मक विवरण मैंने प्रायः ‘मिश्रबंधु विनोद’ से ही लिये हैं।”
- “जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।”

2.6 अन्य महत्त्वपूर्ण इतिहासकार (आदिकाल के संदर्भ में)

- **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** (जन्म 1907, ग्राम छपरा, जिला बलिया; निधन 19 मई 1979)
- **डॉ. नगेंद्र** (जन्म 1915; निधन 27 अक्टूबर 1999)
- **डॉ. रामकुमार वर्मा** (जन्म 15 सितंबर 1905, सागर, म.प्र.; निधन 1990)
- **रामशंकर शुक्ल ‘रसाल’** : हिंदी साहित्य का इतिहास (1931)। आदिकाल को “जयकाव्यकाल” और रीतिकाल को “कलाकाल” कहा। इसमें कवियों की रचनाओं के उदाहरण नहीं दिए गए। एक ही पुस्तक के रूप में यह सबसे बड़े इतिहास-ग्रंथों में गिना जाता है।
- **डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त** (जन्म 15 जुलाई 1928) : हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (दो खंड, 1965)। जैन कवि **शालिभद्र सूरि** को हिंदी का पहला कवि माना। अन्य ग्रंथ : रस-सिद्धांत का पुनर्विवेचन, आदिकाल की प्रामाणिक रचनाएँ।
- **डॉ. बच्चन सिंह** : हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास (1996)। पृथ्वीराज रासो को “राजनीतिक महाकाव्य” कहा; विद्यापति को “जातीय कवि” कहा।
- **बाबू श्यामसुंदर दास** : हिंदी भाषा और साहित्य (1920), हिंदी कोविद रत्नमाला (1909, 1914)।
- **राहुल सांकृत्यायन** : हिंदी काव्यधारा (अपभ्रंश कवियों का संग्रह); आदिकाल को **सिद्ध-सामंत काल** कहा।
- **अन्य ग्रंथ** : हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास (सूर्यकांत शास्त्री, 1930); हिंदी साहित्य का अतीत (विश्वनाथ प्रसाद मिश्र); हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (विश्वनाथ त्रिपाठी); हिंदी साहित्य का आधा इतिहास (सुमन राजे); हिंदी साहित्य का मौखिक इतिहास (नीलाभ); राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा (मोतीलाल मेनारिया, 1939); A Sketch of Hindi Literature (एडविन ग्रीव्स, 1917)।
- **हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास** : नागरी प्रचारिणी सभा की योजना; पहला खंड हिंदी साहित्य की पीठिका (संपादक राजबली पांडेय) और सोलहवाँ खंड हिंदी का लोकसाहित्य (संपादक कृष्णदेव उपाध्याय)।

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 3

साहित्यशास्त्र

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र

संपूर्ण नोट्स

रस • अलंकार • ध्वनि

रीति • वक्रोक्ति • औचित्य

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

आधुनिक आलोचना-सिद्धांत

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahity.com

भाग 1 : भारतीय काव्यशास्त्र

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य की "आत्मा" को लेकर अलग-अलग संप्रदाय बने। भरत से रस, भामह-दंडी से अलंकार, वामन से रीति, आनंदवर्धन से ध्वनि, कुंतक से वक्रोक्ति और क्षेमेंद्र से औचित्य सिद्धांत आए। इस खंड में पहले तीन आधारभूत टॉपिक हैं (काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन), फिर पाठ्यक्रम के सिद्धांत।

- | | |
|-------------------|----------------------|
| ▪ काव्य-लक्षण | ▪ काव्य-हेतु |
| ▪ काव्य-प्रयोजन | ▪ रस सिद्धांत |
| ▪ रस-निष्पत्ति | ▪ साधारणीकरण |
| ▪ अलंकार सिद्धांत | ▪ रीति सिद्धांत |
| ▪ ध्वनि सिद्धांत | ▪ वक्रोक्ति सिद्धांत |
| ▪ औचित्य सिद्धांत | ▪ शब्दशक्ति |
| ▪ काव्यगुण | ▪ काव्य-दोष |

काव्य की आत्मा : संप्रदाय और प्रवर्तक

रस	अलंकार	रीति	ध्वनि	वक्रोक्ति	औचित्य
भरतमुनि (नाट्यशास्त्र)	भामह	वामन (काव्यालंकारसूत्र)	आनंदवर्धन (ध्वन्यालोक)	कुंतक (वक्रोक्तिजीवित)	क्षेमेंद्र (औचित्यविचारचर्चा)
	दंडी				
	उद्भट				
	रुद्रट				

मम्मट का काव्यप्रकाश इन सबका समन्वय करने वाला ग्रंथ माना जाता है

चित्र 1 : काव्य की आत्मा — संप्रदाय और प्रवर्तक

1. काव्य-लक्षण

काव्य क्या है? — आचार्यों की परिभाषाएँ

“लक्षण” का अर्थ है परिभाषा। हर आचार्य ने काव्य को अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया। परीक्षा में प्रायः परिभाषा देकर आचार्य पूछा जाता है, या आचार्य देकर ग्रंथ। इसलिए नीचे की तालिका को एक साथ याद करें।

आचार्य	ग्रंथ	परिभाषा (सूत्र)	मूल बल
भामह	काव्यालंकार	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् (शब्द और अर्थ का सहभाव ही काव्य है)	शब्द-अर्थ का सहित भाव
दंडी	काव्यादर्श	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली (इष्ट अर्थ से युक्त पदावली काव्य का शरीर है)	पदावली = शरीर
वामन	काव्यालंकारसूत्र	रीतिरात्मा काव्यस्य (रीति काव्य की आत्मा है)	रीति
आनंदवर्धन	ध्वन्यालोक	काव्यस्यात्मा ध्वनिः (ध्वनि काव्य की आत्मा है)	ध्वनि
कुंतक	वक्रोक्तिजीवित	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम् (वक्रोक्ति काव्य का जीवन है)	वक्रोक्ति
मम्मट	काव्यप्रकाश	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः कापि (दोषरहित, गुणसहित शब्दार्थ; अलंकार कहीं-कहीं स्पष्ट न हों तो भी)	दोषहीनता + गुण
क्षेमेंद्र	औचित्यविचारचर्चा	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्	औचित्य
विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (रसयुक्त वाक्य ही काव्य है)	रस
जगन्नाथ	रसगंगाधर	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् (रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है)	रमणीयता

🔍 **परीक्षा-बिंदु:** भामह = शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् | वामन = रीति | आनंदवर्धन = ध्वनि | कुंतक = वक्रोक्ति | विश्वनाथ = रसात्मक वाक्य | जगन्नाथ = रमणीय अर्थ | मम्मट = दोषरहित, गुणसहित, कहीं-कहीं अलंकाररहित।

★ **भ्रम से बचें:** “वाक्यं रसात्मकं काव्यम्” विश्वनाथ का है, कुंतक का नहीं। और “रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्” जगन्नाथ का है, मम्मट का नहीं। यही दो उलट-फेर परीक्षा में सबसे ज़्यादा आते हैं।

काव्य की “आत्मा” पर पाँच दृष्टियाँ

संप्रदाय	प्रवर्तक / प्रमुख आचार्य	काव्य की आत्मा
रस संप्रदाय	भरतमुनि (नाट्यशास्त्र); बाद में विश्वनाथ	रस
अलंकार संप्रदाय	भामह, दंडी, उद्भट, रुद्रट	अलंकार
रीति संप्रदाय	वामन	रीति (विशिष्ट पद-रचना)

संप्रदाय	प्रवर्तक / प्रमुख आचार्य	काव्य की आत्मा
ध्वनि संप्रदाय	आनंदवर्धन; अभिनवगुप्त, मम्मट आदि समर्थक	ध्वनि (व्यंजना)
वक्रोक्ति संप्रदाय	कुंतक (भामह का संकेत)	वक्रोक्ति (वैदग्ध्यपूर्ण उक्ति)
औचित्य संप्रदाय	क्षेमेंद्र	औचित्य

अभ्यास-प्रश्न : काव्य-लक्षण

प्र.1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए। कितने कथन सही हैं?

- भामह ने "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" कहकर काव्य की परिभाषा दी।
- वामन ने रीति को काव्य की आत्मा कहा।
- आनंदवर्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा माना।
- कुंतक ने "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" कहा।

(क) केवल एक

(ख) केवल दो

(ग) केवल तीन

(घ) सभी चार

✓ **उत्तर : (ग)** — चौथा कथन गलत है। "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" साहित्यदर्पण में विश्वनाथ का है। कुंतक का सूत्र "वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्" है। शेष तीन कथन सही हैं।

प्र.2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए।

- "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" साहित्यदर्पण में विश्वनाथ का कथन है।
- "रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्" मम्मट की परिभाषा है।
- "तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि" काव्यप्रकाश में है।
- दंडी ने इष्टार्थ से युक्त पदावली को काव्य का शरीर कहा।

(क) I, II, III और IV

(ख) केवल I और III

(ग) केवल I, III और IV

(घ) केवल I और IV

✓ **उत्तर : (ग)** — रमणीयार्थप्रतिपादक शब्द वाली परिभाषा जगन्नाथ (रसगंगाधर) की है। शेष तीनों कथन सही हैं।

प्र.3. अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए। सही विकल्प चुनिए।

अभिकथन (A) : मम्मट की काव्य-परिभाषा में "अनलंकृती पुनः क्वापि" पद आता है।

कारण (R) : मम्मट के अनुसार काव्य के लिए अलंकार हर स्थान पर अनिवार्य नहीं है; कहीं-कहीं स्पष्ट अलंकार न होने पर भी रचना काव्य रहती है।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

(ख) A और R दोनों सही हैं, पर R, A की सही व्याख्या नहीं है

(ग) A सही है, पर R गलत है

(घ) A गलत है, पर R सही है

✓ **उत्तर : (क)** — “पुनः क्वापि” का अर्थ है कि कहीं अलंकार न भी दिखे, तब भी काव्यत्व बना रहता है। यही मम्मट की उदार दृष्टि है, इसलिए R, A की सही व्याख्या है।

प्र.4. निम्नलिखित कथनों के सत्य या असत्य का चयन कीजिए।

- I. भामह, दंडी, उद्भट और रुद्रट अलंकार संप्रदाय के प्रमुख आचार्य माने जाते हैं।
- II. आनंदवर्धन के अनुसार काव्य की आत्मा रस है, ध्वनि नहीं।
- III. क्षेमेंद्र ने औचित्य को “काव्य का जीवित” कहा।
- IV. जगन्नाथ का ग्रंथ “रसगंगाधर” है।

(क) I असत्य, II असत्य, III सत्य, IV सत्य

(ख) I सत्य, II सत्य, III सत्य, IV सत्य

(ग) I सत्य, II असत्य, III असत्य, IV सत्य

(घ) I सत्य, II असत्य, III सत्य, IV सत्य

✓ **उत्तर : (घ)** — दूसरा कथन असत्य है। आनंदवर्धन ने ध्वनि को आत्मा कहा; रस उसी ध्वनि का एक भेद (रसादि ध्वनि) है। शेष कथन सत्य हैं।

प्र.5. सूची-I (सिद्धांत) का सूची-II (प्रवर्तक) से मिलान कीजिए।

सूची-I	सूची-II
A. अलंकार	1. कुंतक
B. रीति	2. क्षेमेंद्र
C. वक्रोक्ति	3. भामह
D. औचित्य	4. वामन

(क) A-4, B-3, C-1, D-2

(ख) A-3, B-1, C-4, D-2

(ग) A-3, B-4, C-1, D-2

(घ) A-2, B-4, C-1, D-3

✓ **उत्तर : (ग)** — अलंकार-भामह, रीति-वामन, वक्रोक्ति-कुंतक और औचित्य-क्षेमेंद्र।

2. काव्य-हेतु

कवि को काव्य रचने की शक्ति कहाँ से मिलती है?

काव्य-हेतु का अर्थ है काव्य-रचना के कारण। अधिकतर आचार्य "प्रतिभा" (शक्ति) को मूल कारण मानते हैं और व्युत्पत्ति (ज्ञान) तथा अभ्यास को सहायक। तालिका देखें।

आचार्य	काव्य-हेतु	टिप्पणी
भामह	प्रतिभा (मुख्य), साथ में शब्द-अर्थ का ज्ञान, अभ्यास	"काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः" — काव्य किसी प्रतिभावान से ही जन्म लेता है
दंडी	नैसर्गिकी प्रतिभा, निर्मल शास्त्र-ज्ञान (श्रुत), अमंद अभ्यास	तीनों का समन्वय
वामन	लोक, विद्या, प्रकीर्ण (काव्यांग); प्रतिभा = कवित्व का बीज	प्रतिभा को "कवित्वस्य बीजम्" कहा
रुद्रट	शक्ति, व्युत्पत्ति, अभ्यास	मम्मट के "निपुणता" का समतुल्य "व्युत्पत्ति"
राजशेखर	शक्ति (प्रतिभा) — कारयित्री और भावयित्री	काव्यमीमांसा
मम्मट	शक्ति, निपुणता, अभ्यास — तीनों मिलकर (समुदित)	काव्यप्रकाश

काव्य-हेतु : आचार्य और उनकी त्रयी

प्रतिभा	व्युत्पत्ति	अभ्यास
भामह : सर्वप्रमुख	लोक, शास्त्र, काव्य का ज्ञान	निरंतर काव्य-साधना
दंडी : नैसर्गिक प्रतिभा	मम्मट : शक्ति + निपुणता	मम्मट के त्रय का तीसरा अंग
वामन : कवित्व का बीज		
राजशेखर : कारयित्री / भावयित्री		

मम्मट : शक्ति, निपुणता और अभ्यास — तीनों मिलकर काव्य के हेतु

चित्र 2 : काव्य-हेतु — आचार्य और उनकी त्रयी

मम्मट का सूत्र

"शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्। काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥" — शक्ति कवित्व का बीज-रूप संस्कार है। निपुणता लोक, शास्त्र और काव्य के निरीक्षण से आती है। अभ्यास काव्यज्ञों की शिक्षा से बार-बार रचना करना है। मम्मट इन तीनों को एक साथ (समुदित) हेतु मानते हैं।

राजशेखर की दो प्रतिभाएँ

प्रतिभा	किसकी	काम
कारयित्री	कवि की	काव्य की रचना करना
भावयित्री	सहृदय / भावक (पाठक, आलोचक) की	काव्य का रस-आस्वादन और मूल्यांकन

🔗 परीक्षा-बिंदु: मम्मट = शक्ति + निपुणता + अभ्यास (समुदित) | दंडी = नैसर्गिकी प्रतिभा + श्रुत + अमंद अभ्यास | रुद्रट = शक्ति + व्युत्पत्ति + अभ्यास | राजशेखर = कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा | वामन = लोक, विद्या, प्रकीर्ण।

🔗 अभ्यास-प्रश्न : काव्य-हेतु

प्र.1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए।

- I. मम्मट ने शक्ति, निपुणता और अभ्यास तीनों को मिलाकर काव्य का हेतु माना।
- II. मम्मट के अनुसार इनमें से कोई भी एक अकेला पर्याप्त हेतु है।
- III. वामन ने लोक, विद्या और प्रकीर्ण को काव्यांग कहा।
- IV. भामह ने काव्य-रचना में प्रतिभा को अनिवार्य माना।

(क) I, II, III और IV

(ख) केवल I, III और IV

(ग) केवल I और III

(घ) केवल I और IV

✓ उत्तर : (ख) — मम्मट तीनों को "समुदित" (मिलकर) हेतु मानते हैं, अकेले पर्याप्त नहीं। इसलिए दूसरा कथन गलत है।

प्र.2. निम्नलिखित कथनों में कितने सही हैं?

- I. राजशेखर ने प्रतिभा के कारयित्री और भावयित्री दो रूप बताए।
- II. कारयित्री प्रतिभा कवि की और भावयित्री प्रतिभा सहृदय की होती है।
- III. राजशेखर का ग्रंथ "काव्यमीमांसा" है।

यह डेमो फ़ाइल है — पूरे नोट्स स्टोर पर उपलब्ध हैं

आपकी परीक्षा के लिए स्पेशल नोट्स — ऑर्डर पर तैयार!

RPSC, TGT, PGT, UPSC, UGC NET/JRF या किसी भी भर्ती परीक्षा के लिए आपके सिलेबस के अनुसार **अलग से नोट्स** हमारी टीम आपके **ऑर्डर पर तैयार करके देती है।**

- ✓ आपके पाठ्यक्रम पर आधारित
- ✓ आसान भाषा, तालिकाएँ, अभ्यास प्रश्न
- ✓ PDF रूप में व्हाट्सएप पर

यह सेवा **सशुल्क** है; शुल्क ऑर्डर के समय बता दिया जाता है।

ऑर्डर के लिए WhatsApp करें: 9680260474



लेखक परिचय

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी), कॉलेज
व्याख्याता, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

UGC NET पेपर-1 — पूरा कोर्स कॉम्बो

पेपर-1 की सभी इकाइयों के संपूर्ण हिंदी नोट्स, एक ही कॉम्बो में — सीधे खरीदें और आज से तैयारी शुरू करें।

अभी खरीदें → UGC NET पेपर-1 नोट्स

हमारे लिंक

🌐 store.hindisahity.com — पूरे नोट्स और टेस्ट सीरीज़

🌐 hindisahity.com — निःशुल्क अध्ययन-सामग्री

▶ [YouTube : हिंदी साहित्य चैनल](https://www.youtube.com/channel/UC...)

➔ [Telegram : t.me/hindisahitychannel](https://t.me/hindisahitychannel)

यह डेमो अपने साथियों और ग्रुप में शेयर करें

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 4

वैचारिक पृष्ठभूमि

नवजागरण से विमर्शों तक

संपूर्ण नोट्स

नवजागरण

गांधी • आंबेडकर • मार्क्स

अस्तित्ववाद • मनोविश्लेषण

दलित • स्त्री • आदिवासी

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीजन

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahity.com

भाग 1 : नवजागरण और हिंदी का भाषा-आंदोलन

उन्नीसवीं सदी के भारतीय नवजागरण ने समाज-सुधार, राष्ट्रीय चेतना और आधुनिक भाषा-साहित्य की नींव रखी। इस भाग में पहले भारतीय नवजागरण की पृष्ठभूमि, फिर हिंदी नवजागरण, खड़ी बोली आंदोलन, फोर्ट विलियम कॉलेज, भारतेन्दु और महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान हैं।

- भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठभूमि
- खड़ी बोली आंदोलन
- भारतेन्दु व हिंदी नवजागरण
- हिंदी नवजागरण
- फोर्ट विलियम कॉलेज
- महावीर प्रसाद द्विवेदी व हिंदी नवजागरण

भारतीय नवजागरण : प्रमुख सुधारक और संस्थाएँ



चित्र 1 : भारतीय नवजागरण — प्रमुख सुधारक और संस्थाएँ

1. भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि

सुधार-आंदोलनों से राष्ट्रीय आंदोलन तक

उन्नीसवीं सदी में अंग्रेज़ी शिक्षा, छापाखाना और पाश्चात्य विचारों के संपर्क से भारतीय समाज में आत्म-मंथन शुरू हुआ। इसे **भारतीय नवजागरण** कहते हैं। इसमें धार्मिक-सामाजिक सुधार हुए, जिनसे आगे चलकर राष्ट्रीय चेतना और स्वाधीनता आंदोलन को वैचारिक आधार मिला।

सुधारक / संस्था	वर्ष	मुख्य योगदान
राजा राममोहन राय — ब्रह्म समाज	1828	एकेश्वरवाद; सती-प्रथा विरोध (कानून 1829, बेंटिक); संवाद कौमुदी (1821)
डेरोजियो — यंग बंगाल	1820 का दशक	तर्कवाद और स्वतंत्र चिंतन
ईश्वरचंद्र विद्यासागर	1856	विधवा पुनर्विवाह अधिनियम; स्त्री-शिक्षा
प्रार्थना समाज (आत्माराम पांडुरंग; रानाडे)	1867	महाराष्ट्र में धार्मिक-सामाजिक सुधार
ज्योतिबा फुले — सत्यशोधक समाज	1873	जाति-विरोध, शूद्र-अतिशूद्र उत्थान; गुलामगिरी (1873)
स्वामी दयानंद — आर्य समाज	1875 (बंबई)	वेदों की ओर लौटो; सत्यार्थ प्रकाश (1875); शुद्धि
थियोसोफिकल सोसाइटी	1875 (न्यूयॉर्क); 1882 अड्यार	एनी बेसेंट ने भारत में विस्तार किया
सर सैयद अहमद खाँ — अलीगढ़ आंदोलन	1875 (MAO कॉलेज)	मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा
रामकृष्ण मिशन — विवेकानंद	1897	शिकागो धर्म-संसद (1893); सेवा और वेदांत

स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख पड़ाव

वर्ष	घटना
1857	प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
1885	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना
1905	बंग-भंग; स्वदेशी आंदोलन
1915	गांधी का भारत आगमन
1920-22	असहयोग आंदोलन
1930	सविनय अवज्ञा (दांडी यात्रा)
1942	भारत छोड़ो आंदोलन
1947	स्वाधीनता

📌 **परीक्षा-बिंदु:** ब्रह्म समाज (1828) → प्रार्थना समाज (1867) → आर्य समाज (1875) → रामकृष्ण मिशन (1897)। आर्य समाज की स्थापना बंबई में हुई। सत्यार्थ प्रकाश और गुलामगिरी का वर्ष क्रमशः 1875 और 1873। इस दौर का साहित्य पर असर : राष्ट्रीय चेतना, गद्य का विकास, पत्रकारिता।

★ **भ्रम से बचें:** आर्य समाज की स्थापना (1875) और सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन एक ही वर्ष हैं। सत्यशोधक समाज (1873) फुले का है, दयानंद का नहीं।

📌 अभ्यास-प्रश्न : भारतीय नवजागरण

प्र.1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए।

- I. ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय ने 1828 में की।
- II. आर्य समाज की स्थापना 1875 में बंबई में हुई।
- III. सत्यशोधक समाज के संस्थापक ज्योतिबा फुले थे।
- IV. विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856) के पीछे राजा राममोहन राय की मुख्य भूमिका थी।

(क) केवल I और II

(ख) केवल I, II और III

(ग) I, II, III और IV

(घ) केवल I और III

✓ **उत्तर : (ख)** — विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 के पीछे मुख्य भूमिका ईश्वरचंद्र विद्यासागर की थी, राममोहन राय की नहीं। इसलिए चौथा कथन गलत है।

प्र.2. सूची-I (सुधारक/संस्था) का सूची-II (विशेषता/कृति) से मिलान कीजिए।

सूची-I	सूची-II
A. दयानंद सरस्वती	1. गुलामगिरी
B. ज्योतिबा फुले	2. अलीगढ़ आंदोलन
C. सर सैयद अहमद ख़ाँ	3. रामकृष्ण मिशन
D. विवेकानंद	4. सत्यार्थ प्रकाश

(क) A-1, B-4, C-2, D-3

(ख) A-4, B-1, C-3, D-2

(ग) A-3, B-1, C-2, D-4

(घ) A-4, B-1, C-2, D-3

✓ **उत्तर : (घ)** — दयानंद-सत्यार्थ प्रकाश; फुले-गुलामगिरी; सैयद अहमद-अलीगढ़ आंदोलन; विवेकानंद-रामकृष्ण मिशन।

प्र.3. निम्नलिखित कथनों में कितने सही हैं?

- I. प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में हुई।
- II. थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना 1875 में न्यूयॉर्क में हुई।
- III. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में हुई।
- IV. सती-प्रथा निषेध का कानून 1829 में बना।

(क) केवल एक

(ख) केवल दो

(ग) केवल तीन

(घ) सभी चार

✓ उत्तर : (घ) — चारों कथन सही हैं।

प्र.4. अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए। सही विकल्प चुनिए।

अभिकथन (A) : उन्नीसवीं सदी के सुधार-आंदोलनों ने राष्ट्रीय चेतना को आधार दिया।

कारण (R) : इन आंदोलनों ने समाज में तर्क, शिक्षा और आत्म-सम्मान की भावना जगाई।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

(ख) A और R दोनों सही हैं, पर R, A की सही व्याख्या नहीं है

(ग) A सही है, पर R गलत है

(घ) A गलत है, पर R सही है

✓ उत्तर : (क) — तर्क, शिक्षा और आत्म-सम्मान से जो आत्मविश्वास बना, वही राष्ट्रीय चेतना की जमीन बना। इसलिए R से A की व्याख्या होती है।

प्र.5. निम्नलिखित कथनों के सत्य-असत्य का चयन कीजिए।

I. सत्यार्थ प्रकाश 1875 में प्रकाशित हुआ।

II. आर्य समाज का मूल नारा "वेदों की ओर लौटो" है।

III. यंग बंगाल आंदोलन के प्रेरक राजा राममोहन राय थे।

IV. विवेकानंद ने 1893 में शिकागो धर्म-संसद में भाषण दिया।

(क) I सत्य, II सत्य, III असत्य, IV सत्य

(ख) I असत्य, II सत्य, III असत्य, IV सत्य

(ग) I सत्य, II असत्य, III असत्य, IV सत्य

(घ) I सत्य, II सत्य, III सत्य, IV सत्य

✓ उत्तर : (क) — यंग बंगाल के प्रेरक डेरोजियो थे। इसलिए तीसरा कथन असत्य है।

2. हिंदी नवजागरण

रामविलास शर्मा की अवधारणा और हिंदी क्षेत्र का जागरण

हिंदी नवजागरण का संबंध हिंदी भाषी क्षेत्र (उत्तर भारत) के सांस्कृतिक-साहित्यिक जागरण से है। इस अवधारणा को हिंदी आलोचना में व्यवस्थित रूप से **रामविलास शर्मा** ने उठाया। उनके अनुसार **1857 का स्वाधीनता संग्राम** हिंदी नवजागरण की पृष्ठभूमि है, और इसका प्रथम चरण **भारतेंदु युग** तथा दूसरा चरण **महावीर प्रसाद द्विवेदी का युग** है।

हिंदी नवजागरण के चरण (रामविलास शर्मा)



पुस्तकें : भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा (1975) • महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण (1977)

चित्र 2 : हिंदी नवजागरण के चरण

बिंदु	मुख्य बात
रामविलास शर्मा की स्थापना	1857 से हिंदी नवजागरण की शुरुआत; बंगाल के नवजागरण से भिन्न, अधिक जन-आधारित
प्रमुख पुस्तकें (रामविलास शर्मा)	भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा (1975); महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण (1977); 1857 की राज्य क्रांति
चरण	पहला — भारतेंदु युग; दूसरा — द्विवेदी युग
प्रमुख माध्यम	पत्र-पत्रिकाएँ (कवि वचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन, सरस्वती), सभाएँ, नाटक, निबंध
वीरभारत तलवार	रस्साकशी — 19वीं सदी के नवजागरण का समालोचनात्मक अध्ययन (पश्चिमोत्तर प्रांत संदर्भ)

📌 **परीक्षा-बिंदु:** हिंदी नवजागरण की अवधारणा = रामविलास शर्मा | 1857 = आरंभ-बिंदु | पहला चरण = भारतेंदु, दूसरा चरण = द्विवेदी | हिंदी नवजागरण की पुस्तक "महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण" (1977) रामविलास शर्मा की है।

★ **भ्रम से बचें:** "भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा" और "महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण" दोनों रामविलास शर्मा की हैं। नामवर सिंह की नहीं।

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 5

हिन्दी कविता

आदिकाल से आधुनिक काल तक

संपूर्ण नोट्स

आदिकाल • भक्तिकाल

रीतिकाल

आधुनिक कविता

प्रमुख कवि व कृतियाँ

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahitya.com

भाग 1 : आदिकाल से रीतिकाल तक

इस भाग में पाठ्यक्रम की प्राचीन और मध्यकालीन कृतियाँ हैं — रासो, खुसरो, विद्यापति, कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, बिहारी, घनानंद और मीरा। हर टॉपिक में कवि-कृति का परिचय, विषयवस्तु, प्रमुख पात्र/प्रसंग और परीक्षा-बिंदु हैं।

- | | |
|----------------------------|---------------------------------|
| ▪ पृथ्वीराज रासो — रेवा तट | ▪ खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ |
| ▪ विद्यापति की पदावली | ▪ कबीर के दोहे |
| ▪ जायसी ग्रंथावली | ▪ भ्रमरगीत सार |
| ▪ रामचरितमानस — उत्तरकांड | ▪ बिहारी सतसई |
| ▪ घनानंद कवित्त | ▪ मीरां |

पाठ्यक्रम के कवि : काल-क्रम



चित्र 1 : पाठ्यक्रम के कवि — काल-क्रम

1. पृथ्वीराज रासो — रेवा तट (चंदबरदाई)

रासो का 27वाँ समय : शिकार, गोरी-आक्रमण और विजय

रेवा तट पृथ्वीराज रासो का **27वाँ समय** (सर्ग) है। “रेवा” नर्मदा नदी का नाम है। कथा रेवा तट पर शिकार के प्रस्ताव से शुरू होती है, फिर लाहौर के शासक चंद पुंडीर का पत्र आता है कि शहाबुद्दीन गोरी आक्रमण की तैयारी में है। इसके बाद चिनाब नदी के पास चार दिन का भीषण युद्ध होता है और गोरी बंदी बना लिया जाता है। सर्ग का मुख्य रस **वीर** है।

बिंदु	विवरण
रचना / रचयिता	पृथ्वीराज रासो / चंदबरदाई
समय-क्रम	27वाँ समय (कुल 69 समय — वृहत् रूप)
“रेवा” का अर्थ	नर्मदा नदी
नायक	पृथ्वीराज चौहान
प्रतिनायक	शहाबुद्दीन (मुहम्मद) गोरी
मुख्य रस	वीर (आरंभ में शिकार-वर्णन; आगे युद्ध-वर्णन)
छंद	छप्पय, साटक, कंठ शोभा आदि; कवि ने अपने छंद को “कवित्त” भी कहा
भाषा	अपभ्रंश-मिश्रित पिंगल; अरबी-फ़ारसी शब्द (जैसे हमेल)
अलंकार	उत्प्रेक्षा (कवि का प्रिय), अतिशयोक्ति, उपमा, अनुप्रास (छेक/अंत्य), श्लेष
नामकरण पर विवाद	सर्ग में युद्ध अधिक है, शिकार कम; समर्थक कहते हैं कि रेवा तट पर रुके पृथ्वीराज ने वहीं से आक्रमण का उत्तर दिया

चंदबरदाई : जीवन और रासो — तथ्य-सार

बिंदु	तथ्य
जन्म	लाहौर, 1168 ई.; जाति भट्ट (जगात गोत्र); मूल नाम बलिद्य, अन्य नाम पृथ्वीभट्ट
परिवार (रासो-मत)	दो पत्नियाँ कमला और गौरन; दस पुत्र (सूर, सुंदर, सुजान, जल्हण, वल्लह, बलभद्र, केहरि, वीरचंद, अवदुत, गुनाराज) और पुत्री राजाबाई
शुक्ल का वंश-वृक्ष	हरप्रसाद शास्त्री को नानूराम भाट से मिला; इसके अनुसार चंद के चार पुत्र, चौथा जल्ल (जल्हण)
पृथ्वीराज से संबंध	सामंत, राजकवि और अनन्य सखा; जन्म और मृत्यु दोनों एक ही दिन (प्रसिद्धि)
कृपा/ज्ञान	जालंधरी देवी की कृपा; षड्भाषा, व्याकरण, छंदशास्त्र, ज्योतिष, पुराण में निपुण
उक्ति	“पुस्तक जल्हण हत्य दै चलि गज्जन नृप काज” — रासो अधूरा पुत्र जल्हण को सौंपकर चंद गज़नी गया
उपाधियाँ	हिंदी का प्रथम महाकवि (शुक्ल); छप्पय का राजा
रासो का परिमाण	ढाई हजार पृष्ठ; 69 समय; 68 प्रकार के छंद; मुख्य — कवित्त, छप्पय, दूहा, त्रोटक, तोमर, गाहा, आर्या
रस	मूलतः वीर और शृंगार; रौद्र, भयानक आदि भी
भाषा	पिंगल (राजस्थान में ब्रजभाषा का पर्याय)

बिंदु	तथ्य
रासो के बारे में कथन	शुक्ल — हिंदी का प्रथम महाकाव्य; नगेंद्र — घटना कोश; श्यामसुंदर दास और उदयनाथ तिवारी — विशालकाय महाकाव्य; बाबू गुलाबराय — स्वाभाविक विकासशील महाकाव्य; बच्चन सिंह — राजनीति की महाकाव्यात्मक त्रासदी; द्विवेदी — शुक-शुकी संवाद के रूप में रचित; रामस्वरूप चतुर्वेदी — हिंदी का चरित्र पहली बार भाषा और संवेदना दोनों स्तरों पर निखरा
महत्वपूर्ण सर्ग	कयमास वध (पृथ्वीराज रासो का अति महत्वपूर्ण सर्ग)

संस्करण	छंद-संख्या	विशेष
वृहत् (प्रथम)	69 समय, 16306 छंद	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित; 1585 ई. की प्रति के आधार पर; हस्तलिखित प्रतियाँ उदयपुर में
मध्यम (द्वितीय)	7000 छंद	अबोहर और बीकानेर में 17वीं शती की प्रतियाँ; अप्रकाशित
लघु (तृतीय)	3500 छंद, 19 समय	हस्तलिखित प्रतियाँ बीकानेर में
लघुतम (चतुर्थ)	1300 छंद	डॉ. दशरथ शर्मा आदि इसे मूल रासो मानते हैं

प्रामाणिकता का मत	विद्वान
अप्रामाणिक	रामचंद्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा, कविराजा श्यामलदास, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, डॉ. बूलर, मुंशी देवीप्रसाद
प्रामाणिक	मिश्रबंधु, कर्नल टॉड, श्यामसुंदर दास, मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या (ना.प्र. सभा का संस्करण)
अर्द्धप्रामाणिक	हजारीप्रसाद द्विवेदी, सुनीति कुमार चटर्जी, दशरथ ओझा, मुनि जिनविजय — मूल रूप आज उपलब्ध नहीं
अन्य	नरोत्तमदास — चंद ने मुक्तक रूप में रासो रचा; बूलर ने 1875 में कश्मीरी कवि जयानक के पृथ्वीराज विजय के आधार पर रासो को अप्रामाणिक घोषित किया; द्विवेदी — बारहवीं शती की संयुक्ताक्षर और अनुस्वारांत प्रवृत्ति मिलती है

★ परीक्षा-बिंदु : अनुवाद: कर्नल टॉड ने रासो के लगभग तीस हजार पदों का अंग्रेजी अनुवाद किया; रॉयल एशियाटिक सोसायटी (बंगाल) ने इसका मुद्रण आरंभ किया था।

रेवा तट : युद्ध-विवरण

प्रसंग	तथ्य
रेवा	आधुनिक नर्मदा; अमरकंटक से निकलकर खंभात की खाड़ी में; इस देश-खंड को भी रेवा कहते हैं
रेवा तट की सूचना	चामंडराय — बड़े दाँतों वाले ऐरावत जाति के हाथी, शेर, कस्तूरी मृग, कबूतर आदि; चारों प्रकार के हाथी

प्रसंग	तथ्य
शापित हाथी	अंग देश में लोहिताक्ष सरोवर के पास; पालकाव्य ऋषि का हथिनी से जन्म, वे हाथियों से प्रेम करते थे
दूत का समाचार	अर्धरात्रि में खबर — गोरी 8000 हाथी और 18 लाख घोड़े लिए, रात नौ बजे लाहौर से चौदह कोस पर
चंद पुंडीर	दूत-पत्र में लिखा — “चंद पुंडीर अपने प्राणों को मुक्ति का भोग देने हेतु अपने स्थान पर डटा रहेगा”; चिनाब के पास युद्ध; पाँचों पुंडीर वीर मरे; मारे जाने पर भी कबंध पाँच पल खड़ा रहा
युद्ध-तिथि	पंचमी, मंगलवार प्रातः; ‘मंगल ग्रह’ को क्रूर और बलवान बताया गया
व्यूह	सेनापति जैत पँवार की अध्यक्षता में चक्रव्यूह
चौहान-पक्ष	चंद पुंडीर, चित्रांगी रावर, समर सिंह, जैत पँवार, भट्टी, हुसैन खाँ, सोलंकी माधव राय, जय सिंह, गरूअ गोविंद
गोरी-पक्ष	तातार मारूफ़ खाँ और अन्य यवन
मारे गए	सुलख का पिता लखन (शव को महामाया उठा ले गई); योगी जंधारा (राम-रावण जैसा युद्ध करने वाला); लंगा और लंगरी राय; गोरी के हाथी के घुसने से 213 सेनाएँ दबकर मरीं
गोरी के तीन बाण	पहले से रघुवंश गुराई, दूसरे से भीम भट्टी, तीसरे से पृथ्वीराज घायल; तभी गुज्जर ने गोरी को पकड़ा; पृथ्वीराज तरकश से तीन बाण निकाल चुके थे पर चलाने से पहले गोरी पकड़ा जा चुका था
परिणाम	हुसैन खाँ मारा गया; गोरी और निसुरत खाँ बंदी; हाथी पर बाँधकर दिल्ली लाए गए
दंड	एक महीना तीन दिन कैद; अमीरों की प्रार्थना पर दंड — 9000 घोड़े, 700 ऐराकी घोड़े, 8 सफेद हाथी, 20 ढली ढालें, गजमुक्ता और मणि-माणिक्य

छंद	लक्षण
दूहा/दोहा	मात्रिक; विषम चरण में 13, सम में 11 मात्राएँ; अंत में लघु
कवित्त	रेवा तट में ‘कवित्त’ नाम के छंद ग्रंथोक्त लक्षणों से मेल नहीं खाते; चंद ने छप्पय को ही कवित्त कहा (17वीं शती से पहले छप्पय ‘कवित्त’ कहलाता था)
दंडमाली	चंद के समय हरिगीतिका/महीसरी को दंडमाली कहते थे; 16-12 की यति से 28 मात्राएँ; अंत में लघु-गुरु
साटक	आधुनिक छंद-ग्रंथों में नहीं; गुजराती में प्रति चरण 19 वर्ण; संभवतः शार्दूलविक्रीडित का पर्याय
मोतीदाम	13 मात्राओं वाला वार्णिक छंद; 16 चरण; कुल 256 मात्राएँ
रसावला	छंद-प्रभाकर के ‘विमोहा’ से; प्रति चरण छः अक्षर, दस मात्राएँ, दो रगण
अन्य	अरिल्ल, कुंडलिया, कंठशोभा, भुजंगी

कथा-क्रम : आठ पड़ाव

क्रम	घटना
1	देवगिरि जीतकर सेनापति चामंड राय लौटता है और रेवा तट पर शिकार का प्रस्ताव रखता है।

क्रम	घटना
2	चामंड राय हाथियों की उत्पत्ति बताता है — शिव के ललाट के स्वेद-बिंदु से ऐरावत; उसकी संतानें रेवा तट के वनों में फैलीं।
3	पृथ्वीराज के पूछने पर चंदबरदाई बताता है कि देववाहन हाथी पृथ्वी पर कैसे आए — दीर्घतपा ऋषि के शाप से उनकी गति मंद हुई; पालकाव्य ने उनका उपचार किया।
4	रेवा तट पर स्वागत और शिकार; तभी चंद पुंडीर का दूत पत्र लाता है — गोरी की सेना चढ़ाई के लिए तैयार है।
5	पृथ्वीराज मंत्रियों से मंत्रणा करते हैं; जैत पँवार लाहौर जाकर युद्ध की सलाह देता है।
6	सेना सजती है; गोरी के सरदार चिनाब पार करते हैं; शुभ दिन (मंगल पंचमी) देखकर पृथ्वीराज आक्रमण का आदेश देते हैं।
7	चार दिन के युद्ध में चौथे दिन गुज्जर नामक योद्धा गोरी को बंदी बना लेता है; उसे हाथी पर बाँधकर दिल्ली लाया जाता है।
8	गोरी एक माह तीन दिन कैद रहता है; अमीरों की विनती और घोड़े-हाथी-रत्न आदि का दंड लेकर पृथ्वीराज संधि कर उसे विदा करते हैं।

पात्र	भूमिका
पृथ्वीराज चौहान	दिल्ली के राजा; रासो के नायक
चामंड राय	सेनापति; शिकार का प्रस्ताव रखता है
चंदबरदाई	कवि और मित्र; हाथियों की कथा सुनाता है
चंद पुंडीर	लाहौर का शासक; गोरी के आक्रमण की सूचना भेजता है
जैत पँवार	मंत्री; युद्ध की मंत्रणा देता है
तातार मारुफ़ खाँ	गोरी का प्रधान सेनापति
शहाबुद्दीन गोरी	आक्रमणकारी; बंदी बनता है
गुज्जर	गोरी को बंदी बनाने वाला योद्धा
दीर्घतपा / पालकाव्य	हाथियों को शाप देने वाले / उनका उपचार करने वाले ऋषि

प्रमुख पद : मूल पाठ, प्रसंग और व्याख्या

नीचे सर्ग के सात चर्चित पद हैं। मूल पाठ अपभ्रंश-मिश्रित पिंगल में है और संस्करणों में वर्तनी-भेद मिलता है। हर पद में पहले प्रसंग, फिर दो-दो पंक्तियों का मूल पाठ और उसके सामने भावार्थ दिया गया है।

पद 1 : ऐरावत की उत्पत्ति

प्रसंग : चामंड राय पृथ्वीराज को बताता है कि रेवा तट के वनों में हाथियों का वंश कैसे फैला।

मूल पद	भावार्थ / व्याख्या
बिन्द ललाट प्रसेद, करयौ संकर गजराजं। औरा पति धरि नाम, दियौ चढ़नै सुरराजं॥	शिव ने अपने ललाट के पसीने की बूँद से गजराज (हाथी) बनाया, उसका नाम ऐरावत रखा और चढ़ने के लिए इंद्र को दे दिया।

मूल पद	भावार्थ / व्याख्या
दानव दल तेहिं गंजि रंजि उमया उर अंदर। होई क्रपाल हस्तिनी संग बगसी रचि सुंदर।।	उस हाथी ने दानवों की सेना को जीतकर पार्वती के हृदय को प्रसन्न किया; तब कृपा करके (पार्वती ने) उसे एक सुंदर हथिनी का साथ दिया।
औलादि तासु तन आय कै, रेवा तट वन बिछरिय। सामंतनाथ सों मिलत इष, दाहिमै कथ उच्चरिय।।	उसकी संतानें रेवा तट के वन में आकर बिखर गईं — दाहिमा (चामंड राय) ने सामंतनाथ (पृथ्वीराज) से मिलते हुए यह कथा कही।

विशेष : अतिशयोक्ति और पौराणिक कथा का प्रयोग; “दाहिम्म” शब्द चामंड राय के लिए आया है; यही पद रेवा तट के हाथियों का मूल बताता है।

पद 2 : दीर्घतपा का शाप

प्रसंग : पृथ्वीराज पूछते हैं कि देवताओं के वाहन हाथी पृथ्वी पर कैसे आए; कवि चंद उत्तर देता है।

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 6

हिन्दी उपन्यास

प्रारंभ से समकालीन तक

संपूर्ण नोट्स

प्रारंभिक उपन्यास

प्रेमचंद युग

प्रगतिवादी उपन्यास

नई उपन्यास-धारा

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahity.com

इकाई-6 : हिंदी उपन्यास

इस इकाई में पाठ्यक्रम के 13 उपन्यास हैं — देवरानी जेठानी की कहानी से लेकर धरती धन न अपना तक। हर उपन्यास को सात हिस्सों में समझाया गया है : परिचय, कथा-सार, पात्र-तालिका, प्रमुख कथन/प्रसंग, उद्देश्य और समीक्षकों की राय, परीक्षा-सूत्र, तथा उसी उपन्यास से बने कठिन प्रश्न। अंत में मिलान-तालिका, 30 सूत्र-तथ्य और 25 प्रश्नों का मिश्रित परीक्षण है।

- | | |
|---------------------------|-------------------|
| ▪ देवरानी जेठानी की कहानी | ▪ परीक्षा गुरु |
| ▪ गोदान | ▪ शेखर : एक जीवनी |
| ▪ बाणभट्ट की आत्मकथा | ▪ मैला आँचल |
| ▪ झूठा सच | ▪ मानस का हंस |
| ▪ तमस | ▪ राग दरबारी |
| ▪ ज़िंदगीनामा | ▪ आपका बंटी |
| ▪ धरती धन न अपना | |

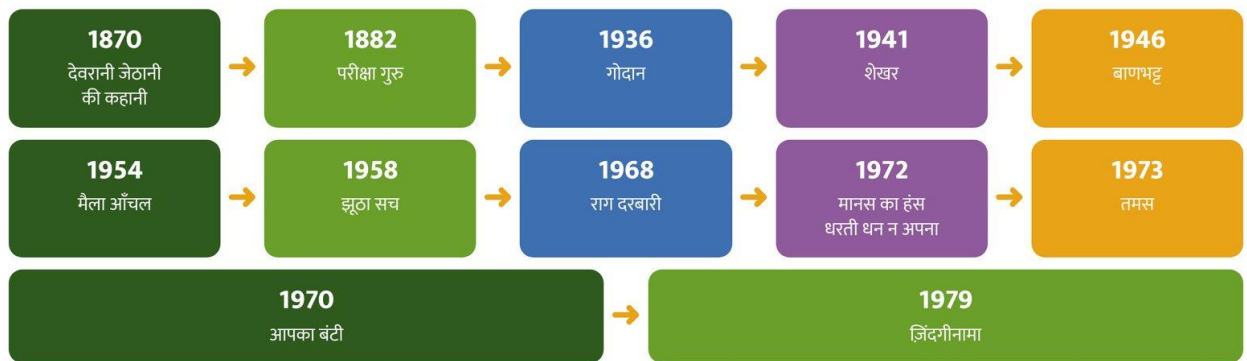
उपन्यास : प्रकाशन-वर्ष तालिका

एक नज़र में — उपन्यास · उपन्यासकार · प्रकाशन (इसे ज़रूर याद करें)

क्र.	उपन्यास	उपन्यासकार	प्रकाशन
1	देवरानी जेठानी की कहानी	पं. गौरीदत्त शर्मा	1870
2	परीक्षा गुरु	लाला श्रीनिवास दास	25 नवंबर 1882
3	गोदान	मुंशी प्रेमचंद	1936
4	शेखर : एक जीवनी (भाग 1)	अज्ञेय	1941 (प्रथम भाग का नाम : उत्थान)
5	बाणभट्ट की आत्मकथा	हजारीप्रसाद द्विवेदी	1946
6	मैला आँचल	रेणु	9 अगस्त 1954 (समता प्रकाशन)
7	झूठा सच	यशपाल	भाग 1 (1958) : वतन और देश; भाग 2 (1960) : देश का भविष्य
8	मानस का हंस	अमृतलाल नागर	1972
9	राग दरबारी	श्रीलाल शुक्ल	1968
10	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	1970 (16 भागों में विभक्त)
11	धरती धन न अपना	जगदीश चंद्र	1972
12	तमस	भीष्म साहनी	1973
13	ज़िंदगीनामा	कृष्णा सोबती	1979

📌 याद रखने का क्रम: क्रम : 1870 → 1882 → 1936 → 1941 → 1946 → 1954 → 1958/60 → 1968 → 1970 → 1972 (मानस का हंस, धरती धन न अपना) → 1973 → 1979।

हिंदी उपन्यास : विकास-रेखा



चित्र 1 : हिंदी उपन्यास की विकास-रेखा

1. देवरानी जेठानी की कहानी

पं. गौरीदत्त · 1870 · निर्मिति की दृष्टि से हिंदी का पहला उपन्यास (डॉ. गोपाल राय)

1. उपन्यास-परिचय

बिंदु	विवरण
लेखक	पं. गौरीदत्त (मेरठ के निवासी; नागरी लिपि और स्त्री-शिक्षा के प्रबल समर्थक)
प्रकाशन-वर्ष	1870
प्रकृति	सामाजिक-सुधारवादी उपन्यास; पारिवारिक कथा के सहारे समाज का चित्रण
भाषा-शैली	सहज बोलचाल की खड़ी बोली, लोकोक्तियों और मुहावरों की भरमार; कहीं-कहीं उपदेश
स्थान	हिंदी उपन्यास-परंपरा का आरंभिक बिंदु; नवजागरण-काल की रचना
कथा-क्षेत्र	मेरठ का वैश्य (अग्रवाल) परिवार

🔍 **परीक्षा-बिंदु:** पहले उपन्यास का विवाद — देवरानी जेठानी की कहानी (1870) : डॉ. गोपाल राय के अनुसार निर्मिति की दृष्टि से पहला | भाग्यवती (1877, श्रद्धाराम फिल्लौरी) : डॉ. विजयशंकर मल्ल के अनुसार पहला | परीक्षा गुरु (1882, लाला श्रीनिवास दास) : आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार “अंग्रेज़ी ढंग का हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास”।

2. कथा-सार

चरण	घटना
परिवार	सर्वसुख मेरठ के संपन्न अग्रवाल बनिया हैं। उनके दो बेटे (दौलतराम, छोटे) और दो बेटियाँ (पार्वती, सुखदेई) हैं।
शिक्षा-भेद	बड़ी बेटी पार्वती अनपढ़ रह जाती है, छोटी सुखदेई को नागरी पढ़ाई जाती है। बड़ा बेटा दौलतराम व्यापार सँभालता है, छोटा अंग्रेज़ी पढ़कर रेल विभाग में 60 रुपये की नौकरी पाता है।
दो बहुएँ	दौलतराम की पत्नी ज्ञानो अनपढ़ और फिजूलखर्च है; छोटे की पत्नी आनंदी पढ़ी-लिखी, सुघड़ और दूरदर्शी है। आनंदी का सपना है कि उसका पोता वकील बने।
कलह	गहनों, खर्च और घर के काम को लेकर देवरानी-जेठानी में खटपट बढ़ती है; बाल-विवाह, ब्याह में दिखावा और संपत्ति के बँटवारे की समस्याएँ उभरती हैं।
परिणाम	पढ़ी-लिखी, बचत करने वाली बहू का घर फलता है, जबकि अशिक्षा और दिखावे वाला घर परेशानी में पड़ता है। निष्कर्ष — स्त्री-शिक्षा और मितव्ययिता ही परिवार का सुख है।

3. पात्र-तालिका

पात्र	परिचय
-------	-------

पात्र	परिचय
सर्वसुख	परिवार के मुखिया; मेरठ के अग्रवाल बनिया
दौलतराम	बड़ा बेटा; व्यापारी
छोटे	छोटा बेटा; अंग्रेज़ी पढ़ा, रेल विभाग का कर्मचारी
ज्ञानो	जेठानी; दौलतराम की पत्नी; अनपढ़, आभूषणप्रिय
आनंदी	देवरानी; छोटे की पत्नी; पढ़ी-लिखी, समझदार
पार्वती	बड़ी बेटी; पढ़ाई से वंचित
सुखदेई	छोटी बेटी; नागरी सिखाई गई
मुंशी टिकतनारायण / हरसहाय काबली	कथा के सहायक पात्र

4. प्रमुख प्रसंग

प्रसंग	किसके बीच	अर्थ / महत्त्व
बेटी को नागरी पढ़ाना	सर्वसुख — सुखदेई	स्त्री-शिक्षा का समर्थन; लेखक का मुख्य सुधारवादी स्वर
गहनों को लेकर कलह	ज्ञानो — आनंदी	आभूषणप्रियता और दिखावे की आलोचना
पोते को वकील बनाने की इच्छा	आनंदी का स्वप्न	नई शिक्षा और अंग्रेज़ी राज में उन्नति की आकांक्षा
बैटवारे की बात	दोनों भाई	संयुक्त परिवार की दरार; संपत्ति-विवाद का चित्र

5. उद्देश्य और विद्वानों की राय

- उद्देश्य — स्त्री-शिक्षा का प्रसार, बाल-विवाह और फिजूलखर्ची पर चोट, घर-परिवार में मेल-जोल का संदेश।
- इसे समाज का दर्पण कहा गया; इसमें नवजागरण की पहली आहट सुनाई देती है।
- भाषा लोकजीवन से जुड़ी है, पर कला की दृष्टि से कच्चापन और उपदेशात्मकता मानी गई है।

6. परीक्षा-सूत्र

🎯 **परीक्षा-बिंदु:** देवरानी जेठानी की कहानी = 1870 = गौरीदत्त = मेरठ | पात्र : ज्ञानो (जेठानी, अनपढ़) बनाम आनंदी (देवरानी, पढ़ी-लिखी) | विषय : स्त्री-शिक्षा, बाल-विवाह, फिजूलखर्ची | गोपाल राय के अनुसार निर्मिति की दृष्टि से पहला उपन्यास।

7. अभ्यास-प्रश्न

✎ अभ्यास-प्रश्न : देवरानी जेठानी की कहानी

प्र.1. देवरानी जेठानी की कहानी के बारे में कौन-से कथन सही हैं?

I. इसके लेखक पं. गौरीदत्त हैं।

II. यह 1870 में प्रकाशित हुआ।

III. इसकी कथा मेरठ के अग्रवाल परिवार की है।

IV. इसे आचार्य शुक्ल ने हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास कहा।

(क) केवल I और II

(ख) केवल I, II और III

(ग) I, II, III और IV

(घ) केवल I और III

✓ **उत्तर : (ख)** — आचार्य शुक्ल ने 'परीक्षा गुरु' को पहला मौलिक उपन्यास कहा है। शेष तीनों कथन सही हैं।

प्र.2. सत्य/असत्य बताइए।

I. आनंदी पढ़ी-लिखी देवरानी है।

II. ज्ञानो छोटे की पत्नी है।

III. छोटे अंग्रेज़ी पढ़कर रेल विभाग में गया।

(क) I असत्य, II असत्य, III सत्य

(ख) I सत्य, II असत्य, III सत्य

(ग) I सत्य, II सत्य, III सत्य

(घ) I सत्य, II असत्य, III असत्य

✓ **उत्तर : (ख)** — ज्ञानो दौलतराम की पत्नी (जेठानी) है, छोटे की पत्नी आनंदी है।

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 7

हिन्दी कहानी

पहली कहानी से नई कहानी तक

संपूर्ण नोट्स

प्रारंभिक कहानी

प्रेमचंद युग

नई कहानी

समांतर कहानी

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीजन

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahitya.com

इकाई-7 : हिंदी कहानी

इस इकाई में पाठ्यक्रम की 21 कहानियाँ हैं — बंग महिला की 'चंद्रदेव से मेरी बातें' से लेकर निर्मल वर्मा की 'परिदे' तक। हर कहानी को सात हिस्सों में समझाया गया है : परिचय-तालिका, कथा-सार, पात्र, चर्चित कथन (किसने किससे), मूल भाव और विद्वानों की राय, परीक्षा-सूत्र, तथा उसी कहानी से बने कठिन प्रश्न। जिन कहानीकारों की दो कहानियाँ हैं, उनका संक्षिप्त जीवन-परिचय पहली कहानी से पहले दिया है। अंत में मिलान-तालिका, 'पहली कहानी' का विवाद, 30 सूत्र-तथ्य और 25 प्रश्नों का मिश्रित परीक्षण है।

- | | |
|----------------------------------|------------------------------|
| ▪ चंद्रदेव से मेरी बातें | ▪ दुलाईवाली |
| ▪ एक टोकरी भर मिट्टी | ▪ राही |
| ▪ ईदगाह | ▪ दुनिया का सबसे अनमोल रतन |
| ▪ कानों में कंगना | ▪ उसने कहा था |
| ▪ आकाशदीप | ▪ अपना-अपना भाग्य |
| ▪ तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफ़ाम | ▪ लालपान की बेगम |
| ▪ गैंग्रीन | ▪ कोसी का घटवार |
| ▪ अमृतसर आ गया है | ▪ चीफ की दावत |
| ▪ सिक्का बदल गया | ▪ इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर |
| ▪ पिता | ▪ राजा निरबंसिया |
| ▪ परिदे | |

कहानी : प्रकाशन-वर्ष तालिका

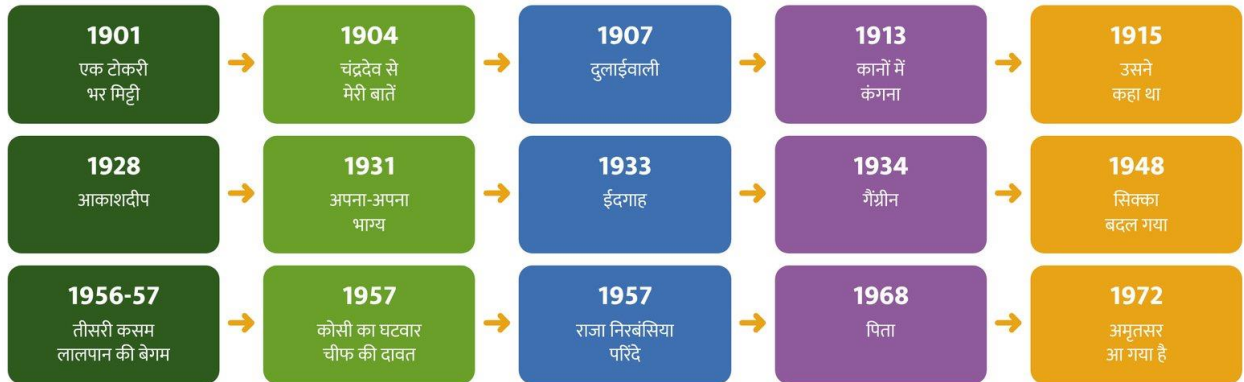
एक नज़र में — कहानी · कहानीकार · प्रकाशन (इसे ज़रूर याद करें)

क्र.	कहानी	कहानीकार	प्रकाशन-वर्ष	पत्रिका / संग्रह
1	एक टोकरी भर मिट्टी	माधवराव सप्रे	1901 (अप्रैल)	छत्तीसगढ़ मित्र
2	चंद्रदेव से मेरी बातें	बंग महिला	1904	सरस्वती
3	दुलाईवाली	बंग महिला	1907	सरस्वती
4	दुनिया का सबसे अनमोल रतन	प्रेमचंद	1907 (संग्रह 1908)	ज़माना; संग्रह सोज़े वतन
5	कानों में कंगना	राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह	1913 (कुछ सूचियों में 1912)	इंदु; संग्रह कुसुमांजलि
6	उसने कहा था	चंद्रधर शर्मा गुलेरी	1915 (जून)	सरस्वती
7	आकाशदीप	जयशंकर प्रसाद	1928	संग्रह आकाशदीप
8	अपना-अपना भाग्य	जैनेंद्र कुमार	1931	संग्रह वातायन
9	ईदगाह	प्रेमचंद	1933 (अगस्त)	चाँद
10	गैंग्रीन (पहले 'रोज़')	अज्ञेय	1934	—
11	सिक्का बदल गया	कृष्णा सोबती	1948	प्रतीक; संग्रह बादलों के घेरे
12	राही	सुभद्रा कुमारी चौहान	संग्रह 1947	सीधे-साधे चित्र
13	तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफ़ाम	रेणु	1956 (संग्रह ठुमरी, 1959)	ठुमरी
14	लालपान की बेगम	रेणु	1957 (कुछ सूचियों में 1956)	ठुमरी
15	कोसी का घटवार	शेखर जोशी	1957	कल्पना; संग्रह 1958
16	चीफ की दावत	भीष्म साहनी	1957	संग्रह पहला पाठ
17	राजा निरबंसिया	कमलेश्वर	1957	संग्रह राजा निरबंसिया
18	परिदे	निर्मल वर्मा	1957 (संग्रह 1960)	हंस (अर्धवार्षिकांक); संग्रह परिदे
19	पिता	ज्ञानरंजन	संग्रह 1968	फेंस के इधर-उधर
20	अमृतसर आ गया है	भीष्म साहनी	संग्रह 1972	पटरियाँ
21	इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर	हरिशंकर परसाई	—	व्यंग्य-कथा (फंतासी)

🕒 **याद रखने का क्रम:** याद रखने का क्रम : 1901 (सप्रे) → 1904 (चंद्रदेव) → 1907 (दुलाईवाली; सबसे अनमोल रतन) → 1913 (कानों में कंगना) → 1915 (उसने कहा था) → 1928 (आकाशदीप) → 1931 (अपना-अपना भाग्य) → 1933 (ईदगाह) → 1934 (गैंग्रीन) → 1948 (सिक्का बदल गया) → 1956-57 (तीसरी कसम, लालपान की बेगम, कोसी का घटवार, चीफ की दावत, राजा निरबंसिया, परिदे) → 1968 (पिता) → 1972 (अमृतसर आ गया है)।

★ वर्ष में भ्रम: 'राही' का वर्ष परीक्षा में प्रायः संग्रह (सीधे-साधे चित्र, 1947) से पूछा जाता है; 'अपना-अपना भाग्य', 'आकाशदीप', 'पिता' और 'अमृतसर आ गया है' की तिथि भी संग्रह-वर्ष से याद की जाती है। जहाँ अलग-अलग सूचियों में दो वर्ष मिलते हैं (कानों में कंगना : 1912/1913, लालपान की बेगम : 1956/1957), वहाँ विकल्प में दोनों न हों तो ही उत्तर तय करें।

हिंदी कहानी : विकास-रेखा



चित्र 1 : हिंदी कहानी की विकास-रेखा

काल-वर्ग और कहानियाँ (सामान्य वर्गीकरण)

प्रारंभिक (1900-1910)	प्रेमचंद-युग	मनोवैज्ञानिक धारा	विभाजन / स्वातंत्र्योत्तर	नयी कहानी	साठोत्तरी / व्यंग्य
एक टोकरी भर मिट्टी	दुनिया का सबसे अनमोल रतन	अपना-अपना भाग्य	सिक्का बदल गया	तीसरी कसम	पिता
चंद्रदेव से मेरी बातें	ईदगाह	गैंग्रीन	अमृतसर आ गया है	लालपान की बेगम	इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर
दुलाईवाली	कानों में कंगना			कोसी का घटवार	
	उसने कहा था			चीफ की दावत	
	आकाशदीप			राजा निरबंसिया	
	राही			परिदे	

चित्र 2 : कहानी-आंदोलन और कहानियाँ

बंग महिला : संक्षिप्त जीवन-परिचय

हिंदी की प्रथम महिला कथाकार (दो कहानियाँ : चंद्रदेव से मेरी बातें · दुलाईवाली)

बिंदु	विवरण
वास्तविक नाम	राजेंद्र बाला घोष (उपनाम 'बंग महिला'; बांग्ला में 'प्रवासिनी')
जन्म	1882, मिर्ज़ापुर (बरियाघाट); माता नीरदवासिनी
पति	पूर्ण चंद्रदेव (जॉर्डन कंपनी, मिर्ज़ापुर); 1916 में पति का निधन
लेखन-काल	1904 से 1917; आचार्य शुक्ल की प्रेरणा से लिखना
निधन	24 फ़रवरी 1949, मिर्ज़ापुर
पहचान	हिंदी की प्रथम महिला कथाकार; स्त्री-शिक्षा और स्त्री-चेतना की अग्रदूत

प्रमुख रचनाएँ और वर्ष

रचना	वर्ष	पत्रिका
चंद्रदेव से मेरी बातें	1904	सरस्वती
कुंभ में छोटी बहू	1906	—
दान-प्रतिदान	1906	—
दुलाईवाली	1907	सरस्वती
मुरला (बांग्ला से अनुवाद)	1908	सरस्वती
भाई-बहन	1908	बालप्रभाकर
दालिया	1909	सरस्वती
हृदय परीक्षा	1915	सरस्वती
मन की दृढ़ता	1915	—

- कहानी-संग्रह 'कुसुम' (1912) उनकी प्रसिद्ध कृति है; अनूदित रचना 'राई से पर्वत' (1902)।
- निबंध : स्त्रियों की शिक्षा, हिंदी के ग्रंथकार, संगीत और सूई का काम, हमारे देश की स्त्रियों की दशा, जोधाबाई तथा गृहकर्चा।
- उनकी रचनाओं का संकलन 'बंग महिला : रचना समय' (संपादक भवदेव पांडेय) है।

1. चंद्रदेव से मेरी बातें

बंग महिला · 1904 · सरस्वती · हिंदी की पहली राजनीतिक कहानी

1. कहानी-परिचय

बिंदु	विवरण
लेखिका	बंग महिला (राजेंद्र बाला घोष)
प्रकाशन	1904, 'सरस्वती' पत्रिका
शैली	पत्रात्मक; उत्तम पुरुष; व्यंग्यप्रधान
विशेष	भवदेव पांडेय के अनुसार हिंदी की पहली राजनीतिक कहानी
प्रेरणा	बालमुकुंद गुप्त के 'शिवशंभु के चिट्ठे' (1903, भारत मित्र) का प्रभाव
निशाना	समकालीन वायसराय लार्ड कर्जन का प्रशासन (गोपाल राय)

🔍 **परीक्षा-बिंदु:** लक्ष्मीसागर वार्षेय ('आधुनिक कहानी का परिपार्श्व' में) : "चंद्रदेव से मेरी बातें 'कहानी' नहीं एक निबंध है।" — विवादित कहानी; इसलिए पहली कहानी की बहस में प्रायः इसे अलग श्रेणी (पहली राजनीतिक कहानी) में रखा जाता है।

2. कथा-सार

कथानायिका (लेखिका) चंद्रमा को 'चंद्रदेव' कहकर पत्र की तरह संबोधित करती है और उनसे बातचीत के बहाने देश की दशा पर व्यंग्य करती है। वह चंद्रमा को 'ढेर दिन का पुराना बूढ़ा' कहकर कहती है कि इतने वर्षों से नौकरी करते-करते अब उन्हें ट्रांसफ़र या पेंशन मिल जानी चाहिए। गौर वर्ण पर कलंक के कारण कलंकी, शशांक, शशधर, शशलांछन जैसी उपमाओं की चर्चा करते हुए वह बताती है कि बंबई में महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा से काला दाग छुड़ाने में प्रो. गज्जर सफल हुए, पर चंद्रमा का कलंक कोई नहीं छुड़ा पाया। बातचीत में देश की बदहाल आर्थिक दशा, बेरोज़गारी, नारी से अमानवीय व्यवहार और पदोन्नति के लिए सिफ़ारिश-चाटुकारिता पर चोट है। अंत में लेखिका चंद्रदेव की चुप्पी को 'स्वीकृति का सूचक' मान लेती है।

3. पात्र

पात्र	परिचय
चंद्रदेव	संबोधित पात्र (चंद्रमा)
कथानायिका	लेखिका स्वयं — दासी के रूप में प्रणाम करती हुई
धन्वंतरि	चंद्रदेव के फ़ैमिली डॉक्टर (देवताओं के वैद्य)
चित्रगुप्त	चीफ़ जस्टिस (यमराज के लेखाधिकारी)
लार्ड कर्जन	समकालीन वायसराय; व्यंग्य का लक्ष्य

पात्र	परिचय
प्रो. गज्जर	बंबई में विक्टोरिया की प्रतिमा का दाग छुड़ाने वाले

4. चर्चित कथन (किसने किससे)

- लेखिका → चंद्रदेव : "भगवान चंद्रदेव! आपके कमलवत-कोमलकांत चरणों में इस दासी का अनेक बार प्रणाम!" (कहानी का आरंभ)
- लेखिका → चंद्रदेव : "क्या आपके डिपार्टमेंट में ट्रांसफ़र होने का नियम नहीं है? क्या आपकी गवर्नमेंट पेंशन भी नहीं देती?"
- लेखिका → चंद्रदेव : "क्षमा कीजिए, आप तो अमर हैं, आपका मृत्यु कहाँ?"
- लेखिका → चंद्रदेव : "देवता भी अपनी जाति के कैसे पक्षपाती होते हैं..." (पक्षपात और सिफ़ारिश पर चोट)
- लेखिका → चंद्रदेव (अंत में) : "मैंने तो आपसे इतनी बातें कहीं, पर आपने किसी बात का अनुकूल या प्रतिकूल उत्तर नहीं दिया। खैर, मैं आपके इस मौनावलंब को स्वीकार का सूचक समझती हूँ।"

5. मूल भाव और विद्वानों की राय

- अंग्रेज़ी शासन की आर्थिक नीतियों, बेरोज़गारी, स्त्रियों की दशा और चाटुकारिता पर पत्र-शैली में व्यंग्य।
- गोपाल राय : वायसराय कर्ज़न के प्रशासन पर करारा व्यंग्य।
- भवदेव पांडेय : पहली राजनीतिक कहानी; वार्ष्णेय : "कहानी नहीं, निबंध है।"

6. परीक्षा-सूत्र

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 8

हिन्दी नाटक

भारतेन्दु से महाभोज तक

संपूर्ण नोट्स

भारतेन्दु युग

प्रसाद युग

नया नाटक

लोक-नाट्य व रंगमंच

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahity.com

इकाई-8 : हिंदी नाटक

इस इकाई में पाठ्यक्रम के 14 नाटक हैं — भारतेंदु की 'भारत दुर्दशा' से लेकर मन्नू भंडारी के 'महाभोज' तक। हर नाटक को सात कदमों में समझाया गया है : परिचय-तालिका, कथा-सार (अंक-वार), पात्र, चर्चित कथन (किसने किससे), मूल भाव व विद्वानों की राय, परीक्षा-सूत्र और कठिन कथन-आधारित अभ्यास-प्रश्न। प्रसाद, भारतेंदु, मोहन राकेश आदि नाटककारों का संक्षिप्त जीवन-परिचय व रचनाएँ भी साथ में हैं।

- | | |
|---------------------|-------------------|
| ▪ भारत दुर्दशा | ▪ अंधेर नगरी |
| ▪ स्कंदगुप्त | ▪ चंद्रगुप्त |
| ▪ ध्रुवस्वामिनी | ▪ सिंदूर की होली |
| ▪ आगरा बाज़ार | ▪ अंधा युग |
| ▪ अंजो दीदी | ▪ आषाढ़ का एक दिन |
| ▪ आधे-अधूरे | ▪ बकरी |
| ▪ एक और द्रोणाचार्य | ▪ महाभोज |

नाटक : प्रकाशन-वर्ष तालिका

एक नज़र में — नाटक · नाटककार · वर्ष · विधा (इसे ज़रूर याद करें)

क्र.	नाटक	नाटककार	वर्ष	अंक / विधा
1	भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	1880	6 अंक; 'नाट्य रासक' (वर्गीकरण में लास्य रूपक)
2	अंधेर नगरी	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	1881	6 अंक; प्रहसन (व्यंग्य)
3	स्कंदगुप्त	जयशंकर प्रसाद	1928	5 अंक, 33 दृश्य; ऐतिहासिक
4	चंद्रगुप्त	जयशंकर प्रसाद	1931	4 अंक (11+10+9+14 = 44 दृश्य); ऐतिहासिक
5	ध्रुवस्वामिनी	जयशंकर प्रसाद	1933	3 अंक; ऐतिहासिक- समस्या नाटक
6	सिंदूर की होली	लक्ष्मीनारायण मिश्र	1934 (रचना); प्रकाशन 1937 भी मिलता है	3 अंक; समस्या नाटक
7	आगरा बाज़ार	हबीब तनवीर	1954	2 अंक; नज़ीर अकबराबादी पर आधारित
8	अंधा युग	धर्मवीर भारती	1955 (रचना 1954 भी कहा जाता है)	5 अंक; गीति नाट्य
9	अंजो दीदी	उपेन्द्रनाथ अशक	1955	2 अंक; समस्या-प्रधान
10	आषाढ़ का एक दिन	मोहन राकेश	1958	3 अंक
11	आधे-अधूरे	मोहन राकेश	1969	अंक-विभाजन नहीं — पूर्वार्द्ध/उत्तरार्द्ध
12	बकरी	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	1974	2 अंक (3+3 दृश्य); नौटंकी/पारसी शैली
13	एक और द्रोणाचार्य	शंकर शेष	रचना 1971; प्रकाशन 1977/80	2 अंक (पूर्वार्द्ध-उत्तरार्द्ध)
14	महाभोज (नाटक)	मन्नू भंडारी	1982 (उपन्यास 1979)	11 दृश्य; उपन्यास का रूपांतर

🎯 परीक्षा-बिंदु: याद रखने का क्रम : 1880 (भारत दुर्दशा) → 1881 (अंधेर नगरी) → 1928 (स्कंदगुप्त) → 1931 (चंद्रगुप्त) → 1933 (ध्रुवस्वामिनी) → 1934 (सिंदूर की होली) → 1954 (आगरा बाज़ार) → 1955 (अंधा युग, अंजो दीदी) → 1958 (आषाढ़) → 1969 (आधे-अधूरे) → 1974 (बकरी) → 1977 (एक और द्रोणाचार्य) → 1982 (महाभोज नाटक)।

★ भ्रम से बचें: कई जगह तिथियाँ अलग मिलती हैं — रचना-वर्ष और प्रकाशन-वर्ष का अंतर : अंधा युग (रचना 1954, प्रकाशन 1955), एक और द्रोणाचार्य (रचना 1971, प्रकाशन 1977), सिंदूर की होली (रचना 1934, प्रकाशन 1937)। प्रश्न में जो विकल्प आए, उससे मिलता वर्ष चुनें और 'रचना/प्रकाशन' शब्द पर ध्यान दें।

हिंदी नाटक : विकास-रेखा



चित्र 1 : हिंदी नाटक की विकास-रेखा

नाटक और नाटककार



चित्र 2 : नाटक और नाटककार

भारतेंदु हरिश्चंद्र : संक्षिप्त जीवन-परिचय

आधुनिक हिंदी नाटक के जनक (दो नाटक : भारत दुर्दशा · अंधेर नगरी)

बिंदु	विवरण
जन्म	भाद्रपद ऋषि पंचमी, संवत् 1907 = 9 सितंबर 1850, काशी (राधाकृष्णदास ने शुक्ल सप्तमी बताई)
निधन	6 जनवरी 1885 (लगभग 35 वर्ष की आयु)
वंश-पिता	सेठ अमीरचंद के वंश की चौथी पीढ़ी; पिता गोपालचंद 'गिरिधरदास' (27 वर्ष में निधन, लगभग 40 ग्रंथ); 'नहुष' को भारतेंदु ने प्रथम नाटक माना
शिक्षा	पिता की मृत्यु से पढ़ाई अधूरी; कुछ समय बनारस के क्रीस कॉलेज में
विवाह	1863, लाला गुलाबराय की पुत्री मन्नो देवी से; तीन संतान (दो पुत्र बचपन में मरे; पुत्री विद्यावती)
उपाधि	'भारतेंदु' — 1880 में काशी के पंडित रघुनाथराव द्वारा (सार सुधानिधि पत्र ने भी प्रस्ताव रखा था)
उपनाम	उर्दू में 'रसा'
संस्थाएँ	कविवर्धिनी सभा (1870), सिटी रीडिंग सभा → पेनी रीडिंग क्लब (1873), तदीय समाज (1873, वल्लभ संप्रदाय के प्रचार हेतु), मुशायरा; 1884 में प्रेरणा से 'नेशनल थियेटर'
पत्रिकाएँ	कविवचन सुधा (1868), हरिश्चंद्र मैगज़ीन/चंद्रिका (1873), बाला बोधिनी (1874; स्त्री-शिक्षा मासिक)

भारतेंदु के बारे में चर्चित कथन

- स्वयं भारतेंदु : "सन् 1873 से हिंदी नई चाल में ढली।"
- काशी नरेश को उत्तर : "हुजूर इस धन ने मेरे पूर्वजों को खाया है, अब मैं इसे खाऊँगा।"
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल : "पुराने पड़े हुए शब्दों को हटाकर काव्य भाषा में भी वे बहुत चलतापन और सफाई लाये।" तथा — "एक ओर पद्माकर और द्विजदेव की परंपरा में दिखायी पड़ते हैं, तो दूसरी ओर स्त्री शिक्षा, समाज सुधार आदि पर भी व्याख्या देते पाये जाते हैं।"
- डॉ. रामविलास शर्मा : भारतेंदु 'आधुनिक साहित्य के पितामह'।
- डॉ. राजेंद्रलाल मित्र : भारतेंदु 'राइटिंग मशीन'।
- रांगेय राघव ने भारतेंदु के जीवन पर उपन्यास 'भारती का सपूत' लिखा।
- नागार्जुन ने जन्मशती (1950) पर 'भारतेंदु' शीर्षक लंबी कविता लिखी।
- बाबू राधाकृष्णदास : भारतेंदु की कुल रचनाएँ 238।

भारतेंदु-मंडल और भारतेंदु-युग

भारतेंदु-मंडल : प्रेमघन, बालकृष्ण भट्ट, लाला श्रीनिवासदास, ठाकुर जगमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, राधाकृष्णदास, रामकृष्ण वर्मा, लाला सीताराम, दामोदर शास्त्री सप्रे। शुक्ल ने भारतेंदु-युग की अवधि सन् 1868-1893 मानी है; 'कविवचन सुधा' (1868) से 'सरस्वती' (1900) तक भी इसे माना जाता है। हिंदी में आलोचना की शुरुआत भारतेंदु के 'नाटक' निबंध से मानी जाती है।

भारतेंदु के नाटक — तीन वर्ग

वर्ग	नाटक (वर्ष)
मौलिक	प्रवास (1868), वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873), सत्य हरिश्चंद्र (1875), प्रेमजोगिनी (1875), विषस्य विषमौषधम् (1876), श्रीचंद्रावली (1876), भारत जननी (1877), भारत दुर्दशा (1880), नील देवी (1881), अंधेर नगरी (1881), सती प्रताप (1883), नवमल्लिका (अपूर्ण)
अनूदित	विद्यासुंदर (1868, बांग्ला), पाखंड विडंबन (1872, संस्कृत 'प्रबोधचंद्रोदय' का तृतीय अंक), धनंजय विजय (1873), कर्पूर मंजरी (1875, राजशेखर, प्राकृत), मुद्राराक्षस (1878, विशाखदत्त), दुर्लभ बंधु (1880, शेक्सपियर 'मर्चेट ऑफ वेनिस'), मृच्छकटिक (अपूर्ण)
अपूर्ण	प्रवास, रत्नावली, नवमल्लिका, मृच्छकटिक; 'सती प्रताप' को बाद में राधाकृष्णदास ने पूरा किया

शैली	नाटक
नाटक	प्रवास, विद्यासुंदर, सत्य हरिश्चंद्र, मुद्राराक्षस, दुर्लभ बंधु
नाटिका	रत्नावली, श्रीचंद्रावली, प्रेमजोगिनी
प्रहसन	अंधेर नगरी, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति
गीति रूपक	नील देवी, सती प्रताप
रूपक / लास्य रूपक	पाखंड विडंबन (रूपक); भारत दुर्दशा (लास्य रूपक)
भाण - व्यायोग - सट्टक	विषस्य विषमौषधम् (भाण); धनंजय विजय (व्यायोग); कर्पूर मंजरी (सट्टक)
नाट्य गीत	भारत जननी

कथानक का स्वरूप	नाटक
पौराणिक	प्रवास, सत्य हरिश्चंद्र, श्रीचंद्रावली, सती प्रताप, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी
सामाजिक	अंधेर नगरी, प्रेमजोगिनी, वैदिकी हिंसा
ऐतिहासिक	मुद्राराक्षस, नील देवी
राष्ट्रीय	भारत जननी, भारत दुर्दशा
राजनीतिक	विषस्य विषमौषधम्

🕒 **परीक्षा-बिंदु:** भारतेन्दु का पहला नाटक : 'विद्यासुंदर' (अनूदित, 1868) | पहला मौलिक नाटक : 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' (1873, प्रहसन) | पहला अभिनीत नाटक जिसमें भारतेन्दु ने भूमिका की : 'जानकी मंगल' (शीतला प्रसाद त्रिपाठी; भारतेन्दु लक्ष्मण बने) | नीलदेवी में 'पागल', सत्य हरिश्चंद्र में 'हरिश्चंद्र' की भूमिका।

भारतेन्दु की व्यंग्य-रचनाएँ और काव्य

- व्यंग्योक्तियों के तीन वर्ग : पैरोडी, स्यापा और गाली।
- 'बंदर सभा' उर्दू नाटक 'इंदर सभा' के गीतों की पैरोडी; 'उर्दू का स्यापा' में 'है है उर्दू हाय हाय'; 'समधिनि मधुमास' गाली-शैली में; 'नये ज़माने की मुकरी' में सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों पर मुकरियाँ।
- काव्य : भक्त सर्वस्व (1870, पहली पद्य-पुस्तिका; 20 वर्ष की आयु में; दूसरा नाम 'श्रीचरण चिह्न वर्णन'), प्रेम माधुरी (1875; सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृति; 2 दोहे, 46 कवित्त, 85 सवैये), प्रेम तरंग (1877), गीत गोविंदानंद (1878), वर्षा-विनोद (1880), फूलों का गुच्छा (1882; 36 पद, 13 लावनियाँ), प्रेम फुलवारी (1883); सतसई सिंगार (बिहारी के 85 दोहों पर कुंडलियाँ)।
- 'दशरथ विलाप' और 'फूलों का गुच्छा' खड़ी बोली में।
- उपन्यास : पूर्णप्रकाश, चंद्रप्रभा (अनूदित); रेखाचित्र : एक कहानी कुछ आपबीती कुछ जगबीती (1875); रिपोर्टाज : दिल्ली दरबार दर्पण।

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 9

हिन्दी निबंध

भारतेंदु से नामवर तक

संपूर्ण नोट्स

भारतेंदु युग

द्विवेदी युग

शुक्ल-युग

ललित निबंध

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahity.com

इकाई-9 : हिंदी निबंध

इस इकाई में पाठ्यक्रम के 11 निबंध हैं — भारतेन्दु के 'दिल्ली दरबार दर्पण' से लेकर नामवर सिंह के 'संस्कृति और सौंदर्य' तक। हर निबंध को इन कदमों में समझाया गया है : परिचय-तालिका, सार, चर्चित कथन (किसने कहा), शैली व संदेश, विद्वानों की राय, परीक्षा-सूत्र और कठिन कथन-आधारित अभ्यास-प्रश्न। निबंधकारों का संक्षिप्त जीवन-परिचय व रचनाएँ भी साथ में हैं। अंत में मिलान-तालिका, 30 सूत्र-तथ्य और 25 प्रश्नों का टेस्ट है।

- दिल्ली दरबार दर्पण
- शिवमूर्ति
- कविता क्या है
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है
- उत्तराफाल्गुनी के आस-पास
- संस्कृति और सौंदर्य
- भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है
- शिवशंभु के चिट्ठे
- नाखून क्यों बढ़ते हैं
- मजदूरी और प्रेम
- उठ जाग मुसाफिर

निबंध : वर्ष-तालिका

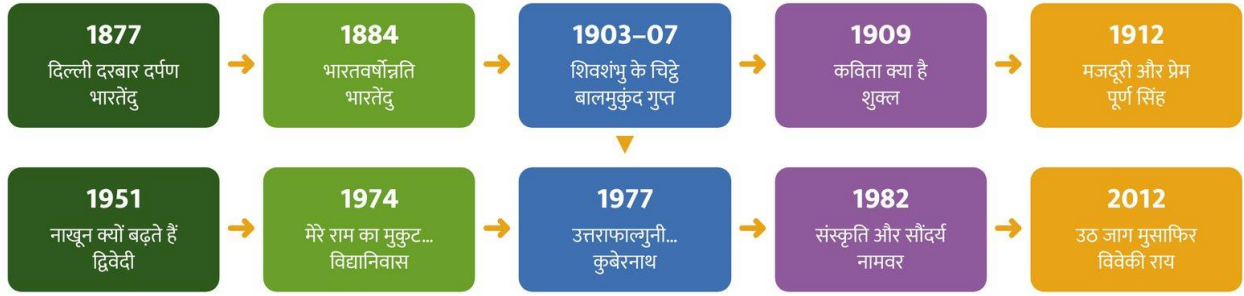
एक नज़र में — निबंध · निबंधकार · वर्ष · शैली (इसे ज़रूर याद करें)

क्र.	निबंध	निबंधकार	वर्ष	शैली / स्वरूप
1	दिल्ली दरबार दर्पण	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	1877	रिपोर्ताज (कहीं 'समाचार शैली' भी)
2	भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	1884 (3 दिसं.), हरिश्चंद्र चंद्रिका	भाषण शैली (ददरी मेला, बलिया)
3	शिवमूर्ति	प्रतापनारायण मिश्र	वर्ष स्पष्ट नहीं मिलता	प्रतीकात्मक / भावात्मक
4	शिवशंभु के चिट्ठे	बालमुकुंद गुप्त	भारतमित्र, 1903-1907 (पुस्तक रूप 1988)	चिट्ठा शैली; व्यंग्यात्मक
5	कविता क्या है	रामचंद्र शुक्ल	सरस्वती, अप्रैल 1909; चिंतामणि-1 (1939)	विचारात्मक / आलोचनात्मक
6	नाखून क्यों बढ़ते हैं	हजारीप्रसाद द्विवेदी	कल्पलता (1951)	ललित / विचारात्मक
7	मेरे राम का मुकुट भीग रहा है	विद्यानिवास मिश्र	1974	व्यक्तिव्यंजक ललित
8	मजदूरी और प्रेम	अध्यापक पूर्ण सिंह	सितंबर 1912, सरस्वती (कहीं 1913 भी मिलता है)	भावात्मक
9	उत्तराफाल्गुनी के आस-पास	कुबेरनाथ राय	प्रायः 1977 (वर्ष स्पष्ट नहीं)	ललित; व्यंग्य + विचार
10	उठ जाग मुसाफिर	विवेकी राय	2012	आंचलिक ललित
11	संस्कृति और सौंदर्य	नामवर सिंह	1982 (दूसरी परंपरा की खोज)	आलोचनात्मक

🔗 **परीक्षा-बिंदु:** याद रखने का क्रम : 1877 (दिल्ली दरबार) → 1884 (भारतवर्षोन्नति) → 1903-07 (शिवशंभु) → 1909 (कविता क्या है) → 1912 (मजदूरी और प्रेम) → 1951 (नाखून) → 1974 (मेरे राम) → 1977 (उत्तराफाल्गुनी) → 1982 (संस्कृति और सौंदर्य) → 2012 (उठ जाग मुसाफिर)।

★ **भ्रम से बचें:** कुछ वर्षों में अंतर मिलता है : (1) कविता क्या है — सरस्वती 1909 बनाम चिंतामणि-1 में 1939; (2) मजदूरी और प्रेम — सितंबर 1912 (कहीं 1913); (3) उत्तराफाल्गुनी — वर्ष स्पष्ट नहीं, प्रायः 1977 (कहीं 1997 भी पढ़ने में आता है); (4) उठ जाग मुसाफिर संग्रह — कहीं 2012, कहीं 2013; (5) शिवशंभु के चिट्ठों के लेखक के रूप में कई तालिकाओं में भूल से बालकृष्ण भट्ट लिखा मिलता है, पर लेखक बालमुकुंद गुप्त हैं। परीक्षा में विकल्प देखकर 'प्रकाशन' और 'संग्रह' शब्द पर ध्यान दें।

हिंदी निबंध : विकास-क्रम (इकाई-9 के 11 निबंध)



शिवमूर्ति (प्रतापनारायण मिश्र) — भारतेंदु-युग; वर्ष स्पष्ट नहीं मिलता दिया

चित्र 1 : हिंदी निबंध की विकास-रेखा

निबंध और निबंधकार : शैली सहित



चित्र 2 : निबंध और निबंधकार

भारतेंदु हरिश्चंद्र : निबंधकार के रूप में

आधुनिक हिंदी के प्रवर्तक (जीवन-परिचय के लिए इकाई-8 का भारतेंदु-खंड भी देखें)

बिंदु	विवरण
जन्म – निधन	9 सितंबर 1850 (काशी) – 6 जनवरी 1885; लगभग 35 वर्ष
आधार-कथन	हिंदी में आलोचना की शुरुआत भारतेंदु के 'नाटक' निबंध से मानी जाती है; स्वयं : "सन् 1873 से हिंदी नई चाल में ढली।"
पत्र-संपादन	कविवचन सुधा (1868) · हरिश्चंद्र चंद्रिका (1873; पहले 8 अंक 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन') · बाला बोधिनी (1874; स्त्री-शिक्षा)
युग	शुक्ल ने भारतेंदु-युग 1868–1893 माना; भारतेंदु-मंडल : प्रेमघन, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह आदि
रचना-संख्या	राधाकृष्णदास के अनुसार कुल रचनाएँ 238

भारतेंदु के निबंधों के वर्ग

वर्ग	प्रमुख निबंध
साहित्यिक / सांस्कृतिक	खुशी, हिंदी भाषा, भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है, जातीय संगीत, ग्रीष्म ऋतु
ऐतिहासिक / जीवनीपरक	बूंदी का राजवंश, कश्मीर कुसुम, कालचक्र, रामायण का समय, महाराष्ट्र देश का इतिहास; चरित — कालिदास, वल्लभाचार्य, जयदेव, रामानुजाचार्य, शंकराचार्य, सुकरात, नेपोलियन तृतीय आदि
धार्मिक	तदीय सर्वस्व, वैष्णव सर्वस्व, वल्लभीय सर्वस्व, मार्गशीर्ष महिमा, हिंदी कुरान शरीफ, ईशु ख्रिस्त वाईस कृष्ण
हास्य-व्यंग्य	स्त्री सेवा पद्धति, मुशायरा, पाँचवें पैगंबर, ईश्वर बड़ा विलक्षण है, कानून ताजीरात शौहर
रिपोर्टाज	दिल्ली दरबार दर्पण
यात्रा	सरयूपार की यात्रा, वैद्यनाथ की यात्रा, हरिद्वार, जनकपुर, लखनऊ, जबलपुर
कला	संगीत सार, नाटक
प्रहसन-संबंधी	स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, सबै जाति गोपाल की, बसंत पूजा, जाति विवेकिनी
पुरातत्त्व	कन्नौज के राजा का दानपत्र, अशोक की चहारदीवारी, काशी मणिकर्णिका, बोधगया के लेख, सारनाथ

अन्य रचनाएँ (संक्षेप में)

काव्य : भक्त सर्वस्व (1870, पहली, 20 वर्ष की आयु), प्रेममालिका (1871), प्रेम माधुरी (1875; सर्वश्रेष्ठ — 2 दोहे, 46 कवित्त, 85 सवैये), प्रेम तरंग (1877), गीत गोविंदानंद (1878), वर्षा-विनोद

(1880), फूलों का गुच्छा (1882), प्रेम फुलवारी (1883), कृष्ण चरित्र (1883), बंदर सभा (इंद्रसभा की पैरोडी), नये ज़माने की मुकरी (खुसरो शैली)। **उपन्यास** : पूर्णप्रकाश, चंद्रप्रभा (मराठी से अनूदित)। **कहानी/रेखाचित्र** : एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती (1875)। **संग्रह** : भारतेंदु ग्रंथावली (नागरी प्रचारिणी सभा); भारतेंदु नाटकावली (श्यामसुंदर दास, 1927)।

📌 **परीक्षा-बिंदु**: भारतेंदु = निबंध-विधा के प्रवर्तक | हिंदी आलोचना की शुरुआत 'नाटक' निबंध से | दिल्ली दरबार दर्पण = रिपोर्ताज | भारतवर्षोन्नति = भाषण (ददरी मेला) | प्रेम माधुरी = सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृति।

1. दिल्ली दरबार दर्पण

भारतेंदु हरिश्चंद्र · 1877 · रिपोर्टाज (समाचार शैली)

1. निबंध-परिचय

बिंदु	विवरण
निबंधकार	भारतेंदु हरिश्चंद्र
वर्ष	1877
शैली	रिपोर्टाज / समाचार बोली — दरबार का आँखों देखा ब्योरा
विषय	1 जनवरी 1877 को दिल्ली में लॉर्ड लिटन का दरबार; महारानी विक्टोरिया को 'भारत की साम्राज्ञी' (Empress of India) घोषित करना
स्वर	ऊपर से ब्योरा, भीतर से सूक्ष्म व्यंग्य — सत्ता का दिखावा और राजाओं की दीनता

2. सार

निबंध में दिल्ली के उस दरबार का आँखों देखा वर्णन है जो वायसराय लॉर्ड लिटन ने 1 जनवरी 1877 को नगर से लगभग 5 मील दूर बड़े मैदान में लगाया। बीच में वायसराय का षट्कोण चबूतरा था; 63 शासक राजाओं को बैठने की जगह मिली; लगभग 3000 निमंत्रित तमाशबीन थे और दक्षिण की ओर 15000 से अधिक सरकारी फौज खड़ी थी। राष्ट्रगान 'गॉड सेव द क्वीन' के बाद पार्लियामेंट के एक्ट के अनुसार महारानी को 'इंडिया इंपरेट्रिक्स' (हिंदुस्तान की राजराजेश्वरी) की पदवी देने का राजाज्ञापत्र चीफ हेराल्ड ने अंग्रेज़ी में पढ़ा और फॉरेन सेक्रेटरी ने उसका उर्दू अनुवाद सुनाया। अंत में वायसराय का 'एड्रेस' हुआ और तीन बार 'हुर्रे' के नारे लगे।

राजाओं को रेशमी झंडे और सोने-चाँदी के तगमे मिले। किलात के खॉ को झंडे की जगह हाथी (चार हज़ार रुपये का हौदा) और जड़ाऊ गहने दिए गए; उनके साथियों को लगभग दस हज़ार रुपये की वस्तुएँ मिलीं। एक राजा ने वायसराय की उपस्थिति को 'खुदा' की मौजूदगी कहा। नवाब लुहारू की हास्यास्पद अंग्रेज़ी और बेगम भूपाल (तास का वस्त्र, नकाब; अनुवादक मिसेज़ फर्थ) के प्रसंग भी हैं — वायसराय ने उन्हें 'मनभावनी अनुवादक' कहा। वायसराय ने हिंदुस्तानी रीति से सलाम किया तो 'पायोनियर' के संपादकों को बुरा लगा।

3. परीक्षा के तथ्य

UGC NET/JRF हिंदी • इकाई – 10

अन्य गद्य विधाएँ

रेखाचित्र से यात्रा-वृत्त तक

संपूर्ण नोट्स

आत्मकथा

जीवनी

संस्मरण • रेखाचित्र

यात्रा-वृत्त • डायरी

प्रामाणिक ग्रंथों का सार

शॉर्ट नोट्स • क्विक रिवीज़न

UGC NET/JRF • SET • TGT • PGT • UPSC • RPSC

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता



store.hindisahitya.com

इकाई-10 : अन्य गद्य विधाएँ

इस इकाई में पाठ्यक्रम के 14 पाठ हैं — रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, व्यंग्य-कथा, डायरी और यात्रा-वृत्त, यानी निबंध-कहानी-उपन्यास-नाटक से अलग गद्य की सारी विधाएँ। हर पाठ को इन कदमों में समझाया गया है : परिचय-तालिका, सार, चर्चित कथन (किसने कहा), विशेष, विद्वानों की राय, परीक्षा-सूत्र और कठिन कथन-आधारित अभ्यास-प्रश्न। हर लेखक का संक्षिप्त जीवन-परिचय व रचनाएँ भी साथ में हैं। अंत में मिलान-तालिका, 30 सूत्र-तथ्य और 25 प्रश्नों का टेस्ट है।

- | | |
|----------------------------|-------------------------|
| ▪ माटी की मूरतें | ▪ ठकुरी बाबा |
| ▪ मुर्दहिया | ▪ प्रेमचंद घर में |
| ▪ एक कहानी यह भी | ▪ आवारा मसीहा |
| ▪ क्या भूलूँ क्या याद करूँ | ▪ आपहुदरी |
| ▪ भोलाराम का जीव | ▪ जामुन का पेड़ |
| ▪ संस्कृति के चार अध्याय | ▪ एक साहित्यिक की डायरी |
| ▪ मेरी तिब्बत यात्रा | ▪ अरे यायावर रहेगा याद? |

अन्य गद्य विधाएँ : वर्ष-तालिका

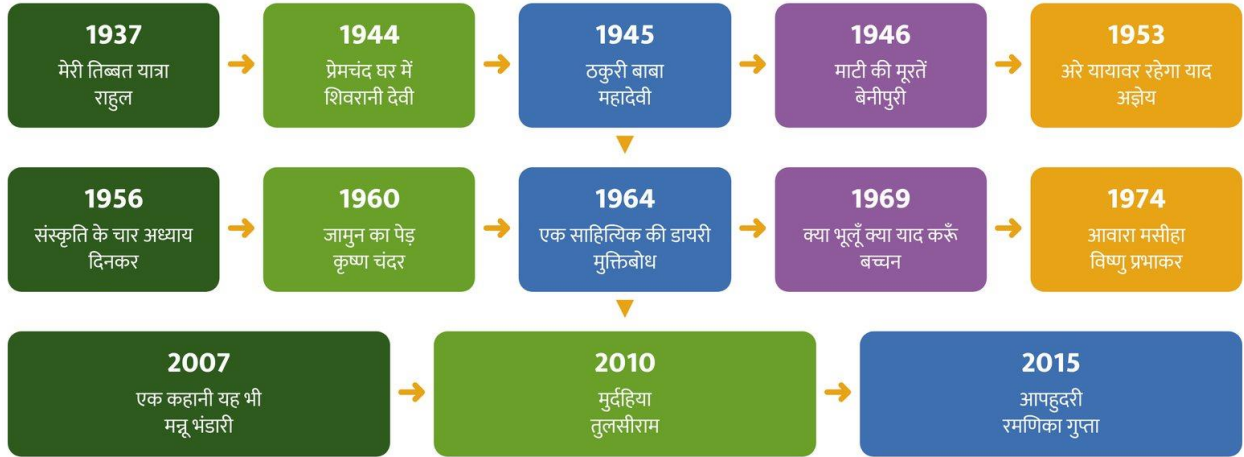
एक नज़र में — पाठ · लेखक · विधा · वर्ष (इसे ज़रूर याद करें)

क्र.	पाठ	लेखक	विधा	वर्ष
1	माटी की मूरतें	रामवृक्ष बेनीपुरी	रेखाचित्र (शब्दचित्र)	1946
2	ठकुरी बाबा (स्मृति की रेखाएँ)	महादेवी वर्मा	रेखाचित्र	1945
3	मुर्दहिया	तुलसीराम	दलित आत्मकथा	2010
4	प्रेमचंद घर में	शिवरानी देवी	जीवनी / संस्मरण	1944
5	एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी	आत्मकथा	2007
6	आवारा मसीहा	विष्णु प्रभाकर	जीवनी (शरत्चंद्र)	1974
7	क्या भूलूँ क्या याद करूँ	हरिवंश राय बच्चन	आत्मकथा (पहला खंड)	1969
8	आपहुदरी	रमणिका गुप्ता	आत्मकथा	2015
9	भोलाराम का जीव	हरिशंकर परसाई	व्यंग्य कथा	1958 (कहीं 1956/57)
10	जामुन का पेड़	कृष्ण चंदर	व्यंग्य कथा	1960
11	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह 'दिनकर'	सांस्कृतिक इतिहास / विचार	1956
12	एक साहित्यिक की डायरी	गजानन माधव मुक्तिबोध	डायरी / विचार-गद्य	1964
13	मेरी तिब्बत यात्रा	राहुल सांकृत्यायन	यात्रा-वृत्त (डायरी शैली)	1937
14	अरे यायावर रहेगा याद?	अज्ञेय	यात्रा-वृत्त	1953

🔍 **परीक्षा-बिंदु:** याद रखने का क्रम : 1937 (तिब्बत) → 1944 (प्रेमचंद घर में) → 1945 (ठकुरी बाबा) → 1946 (माटी की मूरतें) → 1953 (अरे यायावर) → 1956 (संस्कृति के चार अध्याय) → 1960 (जामुन का पेड़) → 1964 (डायरी) → 1969 (क्या भूलूँ) → 1974 (आवारा मसीहा) → 2007 (एक कहानी यह भी) → 2010 (मुर्दहिया) → 2015 (आपहुदरी)।

★ **भ्रम से बचें:** कुछ वर्षों में अंतर मिलता है : (1) स्मृति की रेखाएँ — 1945 (कहीं 1943); (2) भोलाराम का जीव — 1958 (कहीं 1956/1957); (3) एक साहित्यिक की डायरी — 1964 (कहीं 1965); (4) आपहुदरी — 2015 (कहीं 2016); (5) जामुन का पेड़ कुछ सूचियों में 'उपन्यास' के अंतर्गत भी दिखता है, पर यह व्यंग्य कथा है; (6) आवारा मसीहा के तीसरे पर्व का नाम कहीं 'दिशाहीन' भी छपा है, सही 'दिशाहारा' है। विकल्पों में वर्ष का सटीक मिलान देखें और 'प्रकाशन' व 'संग्रह' शब्द पर ध्यान दें।

अन्य गद्य विधाएँ : कालक्रम (प्रकाशन-वर्ष)



भोलाराम का जीव (परसाई) — प्रकाशन-वर्ष विवादित; परीक्षा में विकल्प देखकर तय करें

चित्र 1 : अन्य गद्य विधाओं की विकास-रेखा

पाठ · लेखक · विधा



चित्र 2 : पाठ, लेखक और विधा

रामवृक्ष बेनीपुरी : संक्षिप्त जीवन-परिचय

‘कलम का जादूगर’ — पत्रकार, नाटककार, शब्दचित्रकार, स्वतंत्रता सेनानी

बिंदु	विवरण
जन्म	23 दिसंबर 1899, बेनीपुर (मुजफ्फरपुर, बिहार); बेनीपुरी-ग्रंथावली खंड-1 में जन्म-वर्ष 1902 भी मिलता है
परिवार	पिता फुलवंत सिंह (किसान); बचपन में ही माता-पिता का निधन; मामा द्वारिका सिंह के साथ वंशीपचड़ा में पालन
शिक्षा	मुजफ्फरपुर के कालेजिएट स्कूल में पढ़ाई; आठवीं में ‘हिंदी विशारद’; दसवीं तक की पढ़ाई — असहयोग आंदोलन में छूटी; आदर्श गुरु — मधुरा प्रसाद दीक्षित
विवाह	1915 — उमरानी से
पत्रकारिता	1916 में कानपुर के ‘प्रताप’ में पहली रचना; अनेक पत्र निकाले (नीचे सूची)
जेल-जीवन	अनेक बार जेल; सीवान जेल में ‘अम्बापाली’ व ‘माटी की मूरतें’ का लेखन; हजारीबाग जेल में हस्तलिखित पत्र ‘कैदी’ (1930), ‘तूफान’ (1942)
पहचान	तकिया-कलाम — “प्यारे भाइयो”; ज़मींदारी-उन्मूलन का नारा सबसे पहले देने वालों में गिने जाते हैं
निधन	7 सितंबर 1968, बेनीपुर

जेल को बेनीपुरी ने अपना ‘राजबंदी महाविद्यालय’ कहा। उनका प्रसिद्ध आत्म-कथन है — “हर दुर्भाग्य मेरा सौभाग्य बनता आया है।” माखनलाल चतुर्वेदी ने उनकी लेखनी को ‘फौलाद उगलने वाली’ और ‘मनोजगत में भूकंप पैदा करने वाली’ कहा; कल्बर सिंह केसरी ने उन्हें “तूफानों और भूकम्पों पर सवार” बताया।

प्रमुख रचनाएँ

विधा	रचनाएँ (वर्ष)
उपन्यास	पतितों के देश में (1930), कैदी की पत्नी (1940)
नाटक	अम्बापाली (1940), विजेता (1943-55), तथागत (1948), सीता की माँ (1948-50), नया समाज (1951), अमर ज्योति (1951, रेडियो रूपक), गाँव का देवता, राम राज्य (1951), नेत्रदान, संघमित्रा, सिंहल विजय, शकुंतला, पाटलिपुत्र (अप्रकाशित)
कहानी	चिता के फूल (लेखन 1928-30, प्रकाशन 1947-48)
शब्दचित्र / रेखाचित्र	लालतारा (1937-39; 16 शब्दचित्र), माटी की मूरतें (1946; 12 शब्दचित्र), गेहूँ और गुलाब (1948-50; 25 शब्दचित्र — तीसरा और अंतिम संग्रह)
संस्मरण / आत्मकथात्मक	मील के पथर (1956; 15 व्यक्तिपरक संस्मरण), मुझे याद है (25 संस्मरण), जंजीरें और दीवारें (जेल-जीवन, 1957), कुछ मैं कुछ वे (पत्रकार-जीवन के 35 वर्ष)
यात्रा-वृत्त	पैरों में बाँधकर (1952; इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, स्विट्ज़रलैंड, फ्रांस), उड़ते चलो उड़ते चलो (1954), नेपाल में (1955)

विधा	रचनाएँ (वर्ष)
निबंध	हवा पर (1949), मशाल (1949), नई नारी (1949), बन्दे वाणी विनायकौ (1957), अत्र-तत्र (1975, मरणोपरांत); ललित निबंध — सतरंगा धनुष
जीवनी	शिवाजी (1925), विद्यापति (1925), लंगटसिंह (1926), गुरु गोविंद सिंह (1926), रोजा लुज्जेम्बुर्ग (1943), जय प्रकाश (1947), कार्ल मार्क्स (1951)
संपादन	बिहारी सतसई की टीका (1925), विद्यापति की पदावली (1925)
पत्र-संपादन	तरुण भारत (1921), किसान मित्र (1922), गोलमाल (1924), बालक (1926), युवक (1929), कैदी (1930), कर्मवीर (1934), जनता (1937), तूफान (1942), हिमालय (1946; शिवपूजन सहाय के साथ), जनवाणी (1948), नई धारा, चुन्नू-मुन्नू

📌 **परीक्षा-बिंदु:** बेनीपुरी : जन्म 1899 | निधन 1968 | शब्दचित्र-संग्रह — लालतारा (1937-39), माटी की मूरतें (1946), गेहूँ और गुलाब (1948-50) | 'कलम का जादूगर' | हजारीबाग जेल में हस्तलिखित 'कैदी' (1930) व 'तूफान' (1942) | बिहार सोशलिस्ट पार्टी (1931) के संस्थापक।

1. माटी की मूरतें

रामवृक्ष बेनीपुरी · 1946 · रेखाचित्र / शब्दचित्र

1. पाठ-परिचय

बिंदु	विवरण
लेखक	रामवृक्ष बेनीपुरी
प्रकाशन	1946; अधिकांश शब्दचित्र 1940 में लिखे गए (पांडुलिपि-तिथि 22.09.1940)
समर्पण	मामा स्व. द्वारिकानाथ सिंह और मौसी को
स्वरूप	12 शब्दचित्र; लेखक इन्हें "चलते-फिरते आदमियों के शब्द चित्र" और 'जीवनी' कहते हैं; पांडुलिपि पर शीर्षक-पंक्ति — 'कुछ गँवई स्केच'
12 शब्दचित्र	रजिया, बलदेव सिंह, सरजू भैया, मंगर, रूपा की आजी, देव, बालगोबिन भगत, भौजी, परमेसर, बैजू मामा, सुभान खाँ, बुधिया
लिखा गया	सीवान जेल में (जेल-जीवन के दौरान)
भाव	साधारण ग्रामीण पात्रों की गरिमा; साम्प्रदायिक सद्भाव; सामंती-धार्मिक रूढ़ियों (डायन-प्रथा, तेली-अपशकुन) पर चोट

2. बारह शब्दचित्र : सार

रजिया

चूड़िहारिन **रजिया** अपनी माँ के साथ चूड़ी बेचने लेखक के गाँव आती है। माँ मज़ाक में लेखक की ओर इशारा करके कहती है — "इससे ब्याह करेगी?" रजिया का विवाह बाद में **हसन** से होता है। वर्षों बाद लेखक बड़ा नेता बनकर गाँव लौटता है तो रजिया की पोती उसे दादी से मिलाने ले जाती है — रजिया बूढ़ी है, हसन मर चुका है। चित्र में ग्रामीण सादगी, निश्छलता और हिंदू-मुस्लिम एकता उभरती है। 'मौसी' लेखक की वास्तविक मौसी का रूप है, जो छठ का प्रसाद (ठेकुआ-कसार) देती है। यहीं लेखक कहता है कि अब ऐसे भी गाँव हैं जहाँ हिंदू मुसलमानों के हाथ से सौदा भी नहीं खरीदते।

बलदेव सिंह

यह डेमो फ़ाइल है — पूरे नोट्स स्टोर पर उपलब्ध हैं

आपकी परीक्षा के लिए स्पेशल नोट्स — ऑर्डर पर तैयार!

RPSC, TGT, PGT, UPSC, UGC NET/JRF या किसी भी भर्ती परीक्षा के लिए आपके सिलेबस के अनुसार **अलग से नोट्स** हमारी टीम आपके **ऑर्डर पर तैयार करके देती है।**

- ✓ आपके पाठ्यक्रम पर आधारित
- ✓ आसान भाषा, तालिकाएँ, अभ्यास प्रश्न
- ✓ PDF रूप में व्हाट्सएप पर

यह सेवा **सशुल्क** है; शुल्क ऑर्डर के समय बता दिया जाता है।

ऑर्डर के लिए WhatsApp करें: 9680260474



लेखक परिचय

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी), कॉलेज
व्याख्याता, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

UGC NET पेपर-1 — पूरा कोर्स कॉम्बो

पेपर-1 की सभी इकाइयों के संपूर्ण हिंदी नोट्स, एक ही कॉम्बो में — सीधे खरीदें और आज से तैयारी शुरू करें।

अभी खरीदें → UGC NET पेपर-1 नोट्स

हमारे लिंक

- 🌐 store.hindisahity.com — पूरे नोट्स और टेस्ट सीरीज़
- 🌐 hindisahity.com — निःशुल्क अध्ययन-सामग्री
- ▶ [YouTube : हिंदी साहित्य चैनल](https://www.youtube.com/channel/UC...)
- ➔ [Telegram : t.me/hindisahitychannel](https://t.me/hindisahitychannel)

यह डेमो अपने साथियों और ग्रुप में शेयर करें